भारतीय समाज : समसामयिक प्रश्न

साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान

सं. डॉ. संतोष कौल काक

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर

भारतीय समाज : समसामयिक प्रश्न

साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान

संपादक

डॉ. संतोष कौल काक

बी.एम.रुइया गर्ल्स कॉलेज

11, कृष्ण कुंज, वाच्छा गांधी रोड,

गामदेवी, मुंबई-400007

ISBN : 978-81-922913-5-2

Copyright © Writer

प्रथम संस्करण 2024

मूल्य : ₹495 /-

शीर्षक	Title
साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान	Sahitya Aur Cinema men Mahilaon ka Yogdan
संपादक	Editor
डॉ. संतोष कौल काक	Dr. Santosh Kaul Kak
प्रकाशक	Publisher
मुम्बई भाषा परिषद	Mumbai Bhaashaa Parishad
605, परम मोगा टॉवर	605, Param Moga Tower
जे.एस.एस. रोड	J. S. S. Road
चर्नी रोड	Charni Road
मुंबई - 400 004	Mumbai - 400 004

Phone : 9022 521190 / 9821 251190

Email : publication@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : सुरेश सिंह

आवरण : शिव पांडेय

मुद्रक : सुजाता डिजिटेक, मुंबई-400 011

12. बदलती संस्कृति एवं सहित्य : 'हंस' की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में 130
–डॉ. शोभा माणिक पवार

13. दोहरा अभिशाप : दलित स्त्री की व्यथा-कथा 136
–डॉ. पूनम पटवा

14. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में स्त्री कथाकारों की अक्षुण्ण भूमिका 140
–डॉ. सत्यवती चौबे

15. आत्मकथाकार लेखिकाएँ 152
–प्रा. वणकर रमेशकुमार के.

16. हिंदी संस्मरण साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान 163
–पढियार उषाबेन नानसिंह

17. संवेदना के धरातल पर हिंदी दलित महिला कथा साहित्य : संदर्भ अनुभूति के घेरे में 168
– प्रा. रामलखन पाल

18. समकालीन महिला कहानीकारों की कहानियों में व्यक्त पारिवारिक समस्या 178
–डॉ. रवीन्द्र आर खरे

19. सई परांजपे का साहित्य और सिनेमा में योगदान 184
–प्रा. श्रुति रानडे

20. दलित जीवन की व्यथा को व्यक्त करती कृति शिकंजे का दर्द...... 189
–डॉ. हेमलता मासीवाल

21. आइने के सामने 195
–डॉ. भगवती प्रसाद उपाध्याय

दलित जीवन की व्यथा को व्यक्त करती कृति शिकंजे का दर्द

• डॉ. हेमलता मासीवाल

महिला आत्मकथा स्त्री जीवन की जटिलताओं को समझने का सबसे सशक्त औजार है। महिला आत्मकथा मात्र स्त्री जीवन, उसका अनुभव, संघर्ष, सुख-दुःख ही नहीं है बल्कि व्यक्ति, परिवार, समाज द्वारा किया गया शोषण उपेक्षा आदि को महिलाओं ने जिस रूप में भोगा, जिया, सहा और उनका जिस प्रकार विरोध किया उसी का दस्तावेज है-महिला आत्मकथा। महिला आत्मकथा पुरुषों से भिन्न होती है अपने अर्थ, स्वरूप और सरोकार को लेकर, जब कोई स्त्री आत्मकथा लिखती है तो वह अपने अव्यक्त को ही व्यक्त करती है। वह अपने निजत्व को खोलकर सार्वजनिक करती है और यहीं पर स्त्री आत्मकथा, पुरुषों की आत्मकथा से अलग हो जाती है। स्त्री को निजता पसंद है। निज के भावों और अनुभवों को अभिव्यक्त करने में उसकी रुचि अधिक होती है। एक स्त्री आत्मकथा इसलिए नहीं लिखती है कि अपने निज को सार्वजनिक बनाए और पाठकों को अपना निज परोसे बल्कि जीवन में आए संघर्षों में बहुत कुछ ऐसा है, जिससे समाज की लाखों-करोड़ों पीड़ित स्त्रियों को अपना जीवन समझने में मदद मिल सके।

हिंदी दलित साहित्य में स्त्री और दलित अस्मिता और संघर्ष की सबसे प्रखर रचनाकार सुशीला टाकभौरे हैं। उन्होंने स्त्री और दलित होने की पीड़ा, शोषण, अपमान, उपेक्षा, जाति व्यवस्था, सामाजिक असमानता आदि सभी को बहुत गहरे तक अनुभव किया और भोगा था, इसीलिए उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा स्त्री और दलित दोनों को मजबूत आधार प्रदान किया। उन्होंने अपनी लेखनी से कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, व्यंग, आत्मकथा, वैचारिक लेखन आदि में सदियों से चली आ रही दलितों और स्त्रियों के प्रति होने वाले शोषण का मुखर प्रतिरोध किया है।

सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' एक दलित नारी का जाति, धर्म, सामाजिक भेदभाव, शोषण, पुरुषवादी मानसिकता, लिंग व जाति आधारित शिक्षा आदि के विरुद्ध संघर्ष की गाथा है। दरअसल यह आत्मकथा सदियों से शिकंजे में जकड़े गए दलित और स्त्री की मुक्ति की करुण कथा है। स्वयं लेखिका के शब्दों में "जिस प्रकार किसी ताकतवर को शिकंजे में जकड़कर उसकी पूरी ताकत को नगण्य बना दिया जाता है, उसी प्रकार मुझे भी सामाजिक जीवन की विषमता ने वर्णवादी, जातिवादी व्यवस्था ने जकड़कर रखा है जिसका परिणाम पीड़ा, दर्द, छटपटाहट के सिवा कुछ भी नहीं है।" लगभग यही स्थिति भारतीय समाज में स्त्रियों और दलितों की सदियों से रही है। वर्णवादी और पुरुषवादी मनोवृत्ति के शिकंजे में दोनों ही हजारों वर्षों से जकड़े हुए हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक पीड़ा, घुटन, अन्याय, अत्याचार, दुःख, उपेक्षा, तिरस्कार, शोषण के शिकंजे से मुक्ति की गाथा है शिकंजे का दर्द। इस गाथा में सुशीला ने अपने जन्म, परिवार, बचपन, अपनी स्कूली शिक्षा में वर्ण वादी मानसिकता और छुआछूत के अनुभव, नारी शिक्षा के प्रति परिवार और समाज का नजरिया, नारी शिक्षा के अनुभव, हिंदू धर्म की कट्टरता, वैवाहिक जीवन और अनमेल विवाह और पुरुषवादी मनोवृत्ति के तिक्त अनुभव, अपने विद्रोह के पहले कदम, जाति व्यवस्था के दंश, कार्यस्थल पर शोषण के साथ ही अपने साहित्यिक जीवन के अनुभवों का अत्यंत यथार्थ वर्णन किया है।

सुशीला टाकभौरे का जन्म 9 जुलाई 1954 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बानापुरा नामक गाँव में एक दलित परिवार में हुआ। उन्होंने अपने जन्म के समय को याद करते लिखा है, "मुझे देखकर माँ, पिताजी, नानी और बहन-भाई खुश हुए या नहीं पता नहीं। मगर मुझे रोती देखकर सब हँसे थे। माँ ने तब अतिरिक्त प्यार के साथ मुझे स्वीकार किया होगा। माँ के प्यार को दया नहीं कर सकते। उन्हें मेरे उज्ज्वल भविष्य के प्रति विश्वास होगा या उन्हें खुद पर विश्वास होगा कि वह मेरे भविष्य को जरूर सँवार देंगी"। सुशीला टाकभौरे का बचपन माँ, पिता,

नानी, भाइयों की छत्रछाया में रहकर बीता। ऊँच-नीच, जातिभेद की भावना हर तरफ व्याप्त थी। आजादी के बाद भी दलित परिवार और बस्ती में लड़कियों को पढ़ाने-लिखाने का रिवाज नहीं था। पाल-पोसकर लड़कियों को शादी-विवाह योग्य बना देना की बड़ी बात मानी जाती थी परंतु सुशीला टाकभौरे इस रूप में सौभाग्यशाली रही कि उनके माता-पिता और नानी शिक्षा के प्रति जागरूक थे क्योंकि नानी नगर परिषद में सफ़ाई कर्मचारी थी। वे शिक्षा के महत्व से परिचित थी।

सुशीला टाकभौरे ने पहली बार वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछूत के शिकंजे को बचपन में ही अनुभव कर लिया था। स्कूल में शिक्षक और विद्यार्थी सभी को जाति-पाँति एवं छूआछूत का अनिवार्य रूप से पालन करना पड़ता था। दलित बच्चों को कक्षा में सबसे पीछे टाट की पट्टी पर बैठना पड़ता था। वे अपने हाथ से पानी लेकर पी भी नहीं सकते थे। सुशीला ने अपनी पढ़ाई जाति-पाँति एवं छुआछूत के इन्हीं शिकंजों की जकड़न से लड़ते हुए किसी तरह पढ़ सकीं। शिक्षा के दौरान आने वाली बाधाओं को तोड़ते हुए उन्होंने ग्यारहवीं हायर सेकेंडरी की परीक्षा उत्तीर्ण कर कीर्तिमान स्थापित किया। वे अपनी जाति की एकमात्र लड़की थी जिसने पूरे होशंगाबाद जिले में इस लक्ष्य को प्राप्त किया। उन्होंने इसका श्रेय अपनी माँ को दिया। पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए उस समय माँ डाकबंगले में झाड़ने-बुहारने का काम करने लगी थी।

हायर सेकेंडरी की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सुशीला टाकभौरे ने कुसुम महाविद्यालय में प्रवेश लिया। महाविद्यालय की एक छात्रा प्रेमलता के प्रेम प्रसंगों की चर्चा हो रही थी, ऐसी स्थिति में माँ ने जब लेखिका को आगाह किया तब उन्होंने अपनी माँ से कहा कि मैं तो बूढ़ी ही जनमी हूँ। लेखिका इस प्रसंग को याद करती है कि ऐसा उन्होंने क्यों कहा? "मगर मैंने ऐसा क्यों कहा, यह मुझे पता नहीं था। छोटी उम्र में सिर के बाल सफेद हो जाना कोई अचम्भे की बात नहीं थी। मैं अपने कथन के कारण की खोज कई दिनों तक करती रही थी। उन दिनों मैं बहुत गंभीर रहती थी, शायद इसलिए कहा हो दलित समुदाय विशेषकर कर

लड़कियों को हमेशा ललचाई निगाह से देखते हैं। कुसुम महाविद्यालय के प्राचार्य ने सुशीला को मार्गदर्शन के लिए जब घर आने की बात कही तब उसकी सहेली नर्मदा ने उसे सावधान किया। उस समय उसे माँ की नसीहत याद आई कि "बड़े लोगों की बाते भी बड़ी रहती हैं। चाहे जितनी बड़ी बात हो जाय, कोई मुँह नहीं खोलता। लोग उनकी बात करने से डरते हैं। मगर किसी गरीब की ऐसी कोई बात हो जाए तो लोग मुँह पर भी और पीठ पीछे भी थू-थू करते हैं। गरीब की संपत्ति उसकी इज्जत है, खासकर बेटियों की इज्जत।"

जाति व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था ने दलितों की शिक्षा में सदैव शिकंजे की भूमिका निभाई है। इन्होंने अक्सर दलित प्रतिभाओं को कुचल दिया है। इसी जाति और वर्ण व्यवस्था के शिकार सुशीला का भाई शंकर भी होता है। उनके उच्च शिक्षा प्राप्ति के सपने को चकनाचूर कर दिया गया। वह नर्मदा महाविद्यालय में विज्ञान विषय से पढ़ाई के लिए प्रवेश लिया था। रैगिंग से तंग आकर साहसी शंकर ने परंपरा को तोड़ते हुए उन छात्रों की पिटाई कर दी। प्राध्यापक-प्राचार्य सभी उसके खिलाफ हो गए। एक होनहार नवयुवक को वर्ण व्यवस्था के अभिशाप से मजदूर बनना पड़ा। वर्ण व्यवस्था ने एक शंकर को ही मजदूर नहीं बनाया उसने तो पिछले पाँच हजार वर्षों से ऐसे ही न जाने कितने शंकरों को मजदूर बनने पर विवश किया इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

सुशीला टाकभौरे ने अपनी आत्मकथा में अपने वैवाहिक जीवन और अनमेल विवाह से उपजी त्रासदी का बहुत मार्मिक चित्रण किया है। घटना सन 1972 की है, नागपुर के सुंदर लाल टाकभौरे अपनी माँ और बहन के साथ लेखिका को देखने आए। दुबले पतले, मध्यम कद और गेहुँआ रंग के टाकभौरे के सिर पर सामने बाल नहीं थे। उन्होंने सिर के पीछे के बाल घुमाकर सामने किए थे। सुशीला को उनकी उम्र अधिक लग रही थी। टाकभौरे की बहन ने जब अपने भाई को हाई स्कूल का हेडमास्टर, समाज का बड़ा नेता और बड़ा विद्वान बताया तब सुशीला ने अपने मन शंका हुई कि उनकी उम्र ज्यादा होगी। जब सुशीला के पिता और भाई

ने सच्चाई जानने के लिए उनकी उम्र के बारे में पूछा तो उन्होंने अत्यंत सहजता से यह उत्तर दिया कि मैंने इसी साल बी.ए. फाइनल की परीक्षा दी है। दरअसल उस समय उनकी उम्र लगभग 36 वर्ष थी। वे अपने आपको आधुनिक और खुले विचार वाले मानते थे। परंतु विवाद होते ही उनकी आधुनिकता और खुलापन दोनो ही गायब हो गये और उनकी मर्दवादी मनोवृत्ति तथा सामंती सोच दिखाई देने लगी। पत्नी को ताड़ना देना, उसे पैरों की जूती समझना, बहन को खुश करने के लिए पत्नी को मारना आदि का लेखिका ने करुणामय चित्रण किया है। लेखिका ने ऐसे ही प्रसंग का वर्णन किया है "स्कूल से या बाहर से आने के बाद कभी कभी टाकभौरे मेरे सामने पैर लंबे कर देते। मेरा ध्यान न रहने पर हाथ से इशारा करके जूते उतारने के लिए कहते। मैं चुपचाप उनके पैरों के पास बैठकर जूते के फीते खोलती, जूते उतारती, मोजे उतारती। यह बात मुझे अजीब लगती थी।" सुशीला को उनके पति का प्रेम कभी नहीं मिला। उनके पति उनसे अजनबी की तरह व्यवहार करते थे। उन्हें हमेशा अपमानित किया जाता था। उन्होंने लिखा है कि, "ईर्ष्या-द्वेष से भरी ननद ताने देती-दहेज में कुछ नहीं मिला, नीच खानदान की है ...कुछ काम करना नहीं आता ...बिल्कुल भेताड़ है ...कितनी अच्छी लड़कियों के रिश्ते थे, खड़े की लेड़ी ले आए हैं, पागल है, मूर्ख है।"

सुशीला का वैवाहिक जीवन अत्यंत त्रासद भरा था। वह चाह कर भी कुछ कर नहीं कर पा रही थी। वे अक्सर यही सोचा करती थी कि अपनी इस स्थिति के लिए वे स्वयं जिम्मेदार हैं माता पिता के घर पर हमेशा सुरक्षित रही, कभी ऐसी स्थितियों का सामना नहीं हुआ। लेखिका ने अपने अध्ययन के दौरान यह पढ़ा था कि जब नारी निडर होकर अपना रोष प्रकट करती है तो पुरुष के होश उड़ जाते हैं। एक दिन खर्च को लेकर जवाब तलब करने पर सुंदरलाल ने मारने के लिए चप्पल उठाई तो वही चप्पल सुशीला ने भी अपने हाथों में उठा लिया। पत्नी के इस रौद्र रूप को देखकर सुंदरलाल अवाक् हो गया। उसने सुशीला के इस रूप की कभी कल्पना भी नहीं की थी। उस दिन से सुंदरलाल का अपनी पत्नी

के प्रति रवैया बदल गया। सुशीला के यह विद्रोह का पहला कदम था। उनके इस एक साहस ने उनके पति की सत्ता की चूलें हिलाकर रख दिया और उस दिन से उन्होंने अपना वेतन और पासबुक अपने पास रखने लगी। पति की दासता से मुक्त हो गई। अब अपने निर्णय स्वयं लेने लगी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है इस आत्मकथा में एक दलित नारी का जाति, धर्म, सामाजिक भेदभाव, शोषण, पुरुष वादी मानसिकता, लिंग व जाति आधारित शिक्षा, आदि के विरुद्ध संघर्ष की गाथा है। भारतीय समाज में स्त्री और दलित सदियों से वर्णवादी और पुरुषवादी मनोवृत्ति के शिकंजे में हजारों वर्षों से जकड़े हुए हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक पीड़ा, घुटन, अन्याय, अत्याचार, दुःख, उपेक्षा, तिरस्कार, शोषण के शिकंजे से मुक्ति की गाथा है-शिकंजे का दर्द। इस गाथा में सुशीला ने अपने जन्म, परिवार, बचपन, अपनी स्कूली शिक्षा में वर्ण वादी और छुआछूत के अनुभव, नारी शिक्षा के प्रति परिवार और समाज का नजरिया, नारी शिक्षा के अनुभव, हिंदू धर्म की कट्टरता, वैवाहिक जीवन और अनमेल विवाह और पुरुष वादी मनोवृत्ति के तिक्त अनुभव, अपने विद्रोह के पहले कदम, जाति व्यवस्था के दंश, कार्यस्थल पर शोषण के साथ ही अपने साहित्यिक जीवन के अनुभवों का अत्यंत यथार्थ वर्णन किया है।

संपर्क :
असिस्टेंट प्रोफेसर
बी.एम.रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुंबई

❋❋❋

STARTUP SUCCESS BLUEPRINT:

Deciphering Legal and Financial Perceptions in Western India

Dr. Kashyap A. Ganatra

STARTUP SUCCESS BLUEPRINT:

Deciphering Legal and Financial Perceptions in Western India

Author: Dr. Kashyap A. Ganatra

ISBN: 978-81-972952-7-0

Price: Rs. 300/-

First Published in May, 2024

Publisher & Printer:

Koryfi Group of Media and Publications
Address: B-515, 5th Floor, Shalin Square, Nr. Lalgebi Circle,
S. P. Ring Road, Hathijan, Ahmedabad, Gujarat, India - 382445
Phone: +91-635 635 60 70 | **Email:** editor@koryfigroup.org
Website: book.koryfigroup.org

Cover Designer:
Nikhil Panchal

© 2024 by Dr. Kashyap A. Ganatra

All Rights Reserved

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author & publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damage that may result from the use of information contained within.

भारतीय समाज : समसामयिक प्रश्न

साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान

सं. डॉ. संतोष कौल काक

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर

भारतीय समाज : समसामयिक प्रश्न

साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान

संपादक

डॉ. संतोष कौल काक

बी.एम.रुइया गर्ल्स कॉलेज

11, कृष्ण कुंज, वाच्छा गांधी रोड,

गामदेवी, मुंबई-400007

ISBN : 978-81-922913-5-2

Copyright © Writer

प्रथम संस्करण 2024

मूल्य : ₹495 /-

शीर्षक	Title
साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान	Sahitya Aur Cinema men Mahilaon ka Yogdan
संपादक	Editor
डॉ. संतोष कौल काक	Dr. Santosh Kaul Kak
प्रकाशक	Publisher
मुम्बई भाषा परिषद	Mumbai Bhaashaa Parishad
605, परम मोगा टॉवर	605, Param Moga Tower
जे.एस.एस. रोड	J. S. S. Road
चर्नी रोड	Charni Road
मुंबई - 400 004	Mumbai - 400 004

Phone : 9022 521190 / 9821 251190

Email : publication@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : सुरेश सिंह

आवरण : शिव पांडेय

मुद्रक : सुजाता डिजिटेक, मुंबई-400 011

ISBN : 978-81-922913-5-2

Copyright © Writer

प्रथम संस्करण 2024

मूल्य : ₹495 /-

शीर्षक	Title
साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान	Sahitya Aur Cinema men Mahilaon ka Yogdan
संपादक	Editor
डॉ. संतोष कौल काक	Dr. Santosh Kaul Kak
प्रकाशक	Publisher
मुम्बई भाषा परिषद	Mumbai Bhaashaa Parishad
605, परम मोगा टॉवर	605, Param Moga Tower
जे.एस.एस. रोड	J. S. S. Road
चर्नी रोड	Charni Road
मुंबई - 400 004	Mumbai - 400 004

Phone : 9022 521190 / 9821 251190

Email : publication@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : सुरेश सिंह

आवरण : शिव पांडेय

मुद्रक : सुजाता डिजिटेक, मुंबई-400 011

सई परांजपे का साहित्य और सिनेमा में योगदान

• प्रा. श्रुति रानडे

हिन्दी सिनेमा में आज कई स्त्री निर्देशिका स्थापित हो चुकी हैं, लेकिन 70 के दशक के अंत तक निर्देशन के क्षेत्र में स्त्रियों की भागीदारी लगभग नगण्य थी। सई परांजपे ने इसी दौर में हिन्दी सिनेमा के निर्देशन के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने कई अर्थपूर्ण फिल्में भी बनायीं।

मराठी माँ और रशियन पिता की संतान सई परांजपे का जन्म 19 मार्च 1936 को लखनऊ शहर में हुआ। पिता योरा स्लिपज़ॉफ़ (Youra Sleptzoff) एक वॉटर कलर आर्टिस्ट थे। माँ शकुंतला परांजपे, मराठी और हिन्दी फिल्मों की जानी मानी अभिनेत्री थीं। सई के जन्म के कुछ ही समय बाद उनके माता-पिता का तलाक हो गया। इसके बाद उनका लालन-पालन उनके नाना रैंगलर परांजपे के घर हुआ। वे विख्यात गणितज्ञ, शिक्षाविद और प्रशासक थे। नानाजी के स्थानांतरण के कारण सई को ऑस्ट्रेलिया के कैनबेरा शहर के अतिरिक्त भारत के कई शहरों में रहने का अवसर मिला। सई बचपन से ही सृजनात्मक प्रतिभा की धनी थीं। आठ वर्ष की आयु में ही उनकी परिकथाओं की एक मराठी किताब 'मुलांचा मेवा' प्रकाशित हुई थी।

सई परांजपे पर बचपन से उनकी अभिनेत्री माँ और माँ के मित्र, विख्यात फिल्मकार अच्युत गोविन्द रानडे का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसने सिनेमा के प्रति रुचि निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1963 में सई ने 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' से तीन वर्षीय डिप्लोमा प्राप्त किया। अपने इंटरव्यू में सई परांजपे ने बताया है कि आजीविका के लिए आकाशवाणी, पुणे से जुड़ी। इस दौरान उन्होंने मराठी के अतिरिक्त कई हिन्दी और अंग्रेज़ी मंचीय नाटक और रेडियो नाटक भी लिखे एवं निर्देशित किये। बाद में वे दूरदर्शन से जुड़ीं जहाँ उन्होंने प्रोड्यूसर और डायरेक्टर के रूप में कई महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

एक स्वतंत्र फिल्मकार के रूप में सई परांजपे की पहली फीचर फिल्म

'स्पर्श' (1980) रही है। इस फ़िल्म के माध्यम से हिन्दी सिनेमा में पहली बार एक ऐसे विषय को स्पर्श किया गया जिसे उस समय तक किसी ने छुआ नहीं था। दृष्टिबाधित बच्चों और वयस्कों की दुनिया को, उनकी सहजता और मानसिक जटिलता को, सूक्ष्मता से समझने में इस फिल्म का बड़ा योगदान है। यह फिल्म दृष्टिबाधितों के प्रति दया भाव की जगह उनके साथ मित्रता के व्यवहार की ज़रूरत पर बल देती है। इस फिल्म को देखने के बाद दृष्टिबाधित और देख सकने वाले लोगों के बीच की दूरियां कृत्रिम लगने लगती हैं। नसिरुद्दीन शाह, शबाना आज़मी और ओमपुरी सहित कई बाल कलाकारों का बेहतरीन अभिनय इस फिल्म में दिखाई देता है। सई ने इस फिल्म में दृष्टिबाधित बच्चों की भूमिका वास्तव में भी दृष्टिबाधित बच्चों को ही दी। उस समय यह एक चुनौतीपूर्ण प्रयोग था, लेकिन सई के कुशल निर्देशन के कारण यह संभव हो पाया था। फिल्म 'स्पर्श' को राष्ट्रीय पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कार भी मिले।

इसके बाद सई ने दो लगातार हास्य फिल्मों का निर्माण किया जो हास्य के आवरण में अर्थपूर्ण थीं। इस तरह की अर्थपूर्ण फिल्मों के निर्माण का उद्देश्य जन-साधारण तक संवेदनशील विषयों को सरलता से पहुँचाना होता है। 'चश्मे बद्दूर' (1981) और 'कथा' (1982), दोनों ऐसी ही फिल्में हैं। 'चश्में बद्दूर' फिल्म तीन दोस्तों की कहानी है, जिसमें दो दोस्त लंपट और एक दोस्त सीधा-सादा है। उनके पड़ोस में एक लड़की रहने आती है, दोनों लंपट दोस्त उसको प्रभावित करने की बहुत कोशिश करते हैं पर मुँह के बल गिरते हैं। अपनी असफलता को छुपाने के लिए वो लड़की के साथ दोस्ती की कहानियाँ रचकर अपने दूसरे मित्रों को खूब नमक-मिर्च लगाकर सुनाते हैं और लड़की को बदनाम करते हैं। जब उन्हें पता चलता है कि उनका सीधा-सादा दोस्त उस लड़की से बेहद प्रेम करता है, तब इर्ष्या में जलकर उन दोनों में (लड़की और अपने दोस्त में) गलतफहमियाँ निर्माण करते हैं। पर जब उन्हें अपनी गलतियों का एहसास हो जाता है तब स्वयं को सुधारने की कोशिश करते हैं। सई ने हास्य-व्यंग के द्वारा कहानी की मासूमियत को जिंदा रखते हुए बहुत खूबसूरत तरीके से इन सारी भावनाओं तथा मनोव्यापारों को फिल्म में प्रस्तुत किया है।

आज भी सिनेमा में दिलचस्पी रखने वाले कई युवाओं को सई परांजपे की फिल्म 'चश्मे बद्दूर' आकर्षित करती है और प्रेरणा देती है।

सई की फिल्म 'कथा' मार्मिक अन्तर्कथाओं से बुनी गई फिल्म है। गाँव से आए, मुंबई के एक चॉल में रहनेवाले राजाराम जोशी की कहानी इस फिल्म में दिखाई गई है जो अपने चॉल में रहनेवाले हर किसी के सुख-दुःख में मदद करता है। राजाराम अपनी पड़ोसन संध्या सबनीस को चाहता है जो उसे 'राजाराम जी' बुलाती है।

राजाराम का पुराना दोस्त वासुदेव जब कहानी में एंट्री करता है तब कहानी में मोड़ आता है। वह अपनी झूठी चिकनी-चुपड़ी बातों से राजाराम के सभी चाहने वालों को अपने वश में कर लेता है और राजाराम देखता रह जाता है। वासुदेव एक साथ तीन अलग-अलग औरतों के साथ प्रेम के फूल खिलाता है। इसे बहुत ही बेहतरीन तरीके से फिल्म के एक गाने में सई ने दर्शाया है।

इस फिल्म में यह दिखाया गया है कि एक मेहनती, मिलनसार और नेक दिल व्यक्ति का लोग फायदा उठाते हैं, उसकी कोई कद्र नहीं करता है किंतु एक तेज़ तर्रार, झूठी शान दिखाने वाला मतलबी व्यक्ति की चिकनी बातों में आ जाते हैं। यह व्यक्ति पूरी फिल्म में सफल और हावी होता दिखाई देता है। लेकिन फिल्म के अंत में लोगों में अच्छाई और सीधे-सरल व्यक्ति के प्रति कद्र की भावना पैदा होती है। इस फिल्म में सई ने कछुए और खरगोश की लोकप्रचलित कथा का सांकेतिक इस्तेमाल किया है। फिल्म 'कथा' का मूल यह है कि धीमेपन और स्थिरता से दौड़ जीती जा सकती है, पर इंतज़ार करते रहना हमेशा लाभदायक नहीं होता। इस फिल्म में फारुख शेख; जो अपनी पहले की फिल्मों में एक सीधे-सरल इंसान की भूमिका अदा करते रहे हैं, ने वासुदेव की भूमिका बखूबी निभाई है। फिल्म 'कथा' में फारुख शेख को चतुर और शातिर फ्लर्ट करने वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सई ने फारुख शेख के आकर्षक व्यक्तित्व को एक अनोखे अंदाज में इस फिल्म में प्रस्तुत किया है।

सई की 1990 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'दिशा' को उनके कलात्मक जीवन का उत्कर्ष बिन्दु माना जाता है। इस फिल्म के प्रति सई अपने

भावनात्मक लगाव को स्वीकार करती हैं। फिल्म 'दिशा' में एक ओर जहाँ गावों के छोटे किसानों और मज़दूरों के कष्टप्रद जीवन, बेरोज़गारी, शहरों, महानगरों की ओर उनके पलायन के विचार दिखाए हैं, तो वहीं दूसरी ओर शहरों-महानगरों में प्रवासी मज़दूरों के कठिन और संघर्षमय जीवन को दिखाया है तथा इन दोनों ही विकल्पों में से किसी एक को चुनने की मजबूरी को भी दर्शाया है।

सई ने फिल्म 'दिशा' में सारे दृश्यों को अर्थपूर्णता से दिखाया है। फिल्म के अंतिम दृश्य में जहाँ दो पात्र दो दिशाओं को चुनते दिखाये गए हैं, वहीं कैमरा अंत में गाँव की दिशा की ओर घूमता है, जो स्वयं सई की गावों के प्रति आस्था और लगाव को व्यक्त करता है। फिल्म 'दिशा' ने 17 देशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और अनेक सम्मान प्राप्त किए हैं।

1998 में रिलीज़ सई परांजपे की फिल्म 'साज़' में दो प्रतिभावान गायक कलाकार बहनें, मानसी और बंसी के जरिए कला, कलाकारों की ज़रूरतें तथा उनसे जुड़े रिश्तों, उनके संघर्षों के विषय में तथा दो बहनों के बीच प्रतिद्वंद्विता को दर्शाया गया है। शबाना आजमी, अरुणा ईरानी, जाकिर हुसैन, परीक्षित सहानी जैसे मातबर कलाकारों पर अत्यंत संवेदनशीलता से फिल्माई गई इस फिल्म के जरिये सई की मनुष्य के मनोव्यापारों को अचूकता से पहचानने की अनोखी प्रतिभा का पता चलता है।

सई परांजपे की फिल्मों में विषयों की विविधता के बावजूद जनसाधारण की कथा और व्यथा का अत्यंत मार्मिक चित्र दिखाई देता है। उनकी फिल्मों के पात्र पलायनवादी नहीं होते, कठिन परिस्थितियों में भी पूरी जीवंतता के साथ संघर्ष करते दिखाई देते हैं। इसलिए सई की फिल्मों का अंत दुखद नहीं होता अपितु उनकी फिल्में एक उम्मीद तथा एक आशा की किरण के साथ खत्म होती हैं। सई की फिल्मों को देखने पर पता चलता है कि, भारतीय समाज, संस्कृति और मानव व्यवहार की सूक्ष्मता पर उनकी गहरी पकड़ है।

सई ने अपनी निर्देशित फिल्मों की पटकथा, संवाद तथा कुछ एक फिल्मों के गीत भी स्वयं लिखे हैं। सई की फिल्मों की रेंज बहुत व्यापक

है। उन्होंने किसानों, मज़दूरों, बेरोज़गार युवकों, अकेली स्त्रियों, शारीरिक चुनौतियों से जूझ रहे लोगों आदि की समस्याओं, मनोभावनाओं, द्वंद्व आदि को अपने सिनेमा में पूरी प्रतिभा से प्रस्तुत किया है। वह हमारे देश के प्रतिभाशाली फिल्मकारों में से एक हैं। सई की सब से बड़ी खासियत यह है कि उनकी फिल्मों की जान केवल कथातत्व नहीं है, परंतु अत्यंत सतर्कता से किया गया दृश्य संयोजन भी है।

सई बालचित्र समिति की अध्यक्षा रही हैं। 'भागो भूत', 'जादू का शंख', 'सिकंदर' जैसे बाल सिनेमा का निर्माण उन्होंने किया है। छोटे परदे पर भी उनके द्वारा बनाए गए सिरियल्स 'अड़ोस-पड़ोस', 'छोटे-बड़े' आदि ने अच्छी-खासी लोकप्रियता हासिल की थी।

मराठी रंगभूमी में भी सई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उनके नाटक 'सख्खे शेजारी', 'जास्वंदी', 'माझा खेळ' 'मांडू दे', 'बिकट वाट वाहिवाट' तथा 'आलबेल' आदि बहुचर्चित रहे हैं।

'हम पंछी एक डाल के', 'पपीहा', 'हेल्पिंग हैंड', 'टॉकिंग बुक्स', 'अंगूठा छाप', तथा 'सुई' जैसी डॉक्युमेंटरीज को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है।

सई परांजपे एक ऐसी निर्देशिका हैं, जिन्होंने पुरुष वर्चस्व के इस क्षेत्र में अपनी एक खास जगह बना ली है तथा हिन्दी सिनेमा को सार्थक दिशा देनेवाले और इसकी ऐतिहासिक परंपरा को वास्तव में समृद्ध करनेवाले अग्रणी निर्देशकों में से एक हैं। सई ने एक प्रयोगधर्मी निर्देशक के रूप में गंभीर, स्वस्थ, अर्थपूर्ण फिल्मों से लेकर हास्य-व्यंग फिल्मों सहित बच्चों के मन को छूनेवाली, मूल्य आधारित, विविधताओं से भरी फिल्में बनाई हैं। सई की फिल्में मनोरंजक होने के साथ-साथ उद्देश्यपरक भी होती हैं। सिनेमा, सिरियल्स तथा साहित्य की विधा को सई की प्रतिभा ने बहुआयामी एवं उन्नत बनाया है।

असोसिएट प्रोफेसर (मनोविज्ञान)
बी.एम.रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुंबई

❀❀❀

ISSN : 2454-7905
H/NAN/10936/2015
SJIF 202 act Factor : 8.024

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

(A Peer Reviewed)

Year - 9, Vol. I, Issue- LXXXVIII, 7 Oct. 2023

Social Status and Challenges of Women in Indian Society

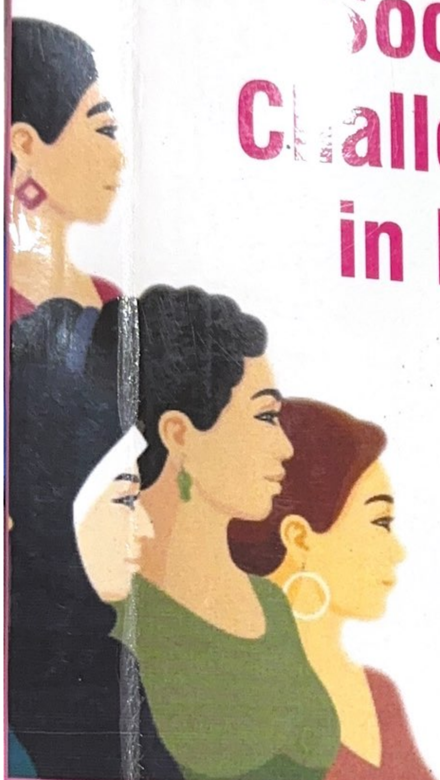

Editor in Chief
Dr. Ramkishan N. Dahiphale
Principal
Mahila Kala Mahavidyalaya,
Chhatrapati Sambhajinagar (Aurangabad).

Quartly Research Journal

(Arts - Humanities - Social Sciences - Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering, Medical, Ayurveda, Pharmaceutical, Journalism, Mass Communication, Library Science Faculty's)

ISSN: 2454 – 7905
SJIF Impact Factor: 8 . 024

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

A Peer Reviewed Referred Journal

Quarterly Research Journal

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering, Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

www.wiidrj.com

Vol. I ISSUE - LXXXVIII Year – 9 07 Oct. 2023

Janata Shikshan Prasarak Mandal's

MAHILA KALA MAHAVIDYALAY, AURANGABAD

(Shreemati Nathibai Damodar Thackersey Women's University, Mumbai)

Organized One Day Interdisciplinary National Conference on

Social Status and Challenges of Women in Indian Society

:: Editor in Chief ::

Dr. Ramkishan N. Dahiphale
Principal
Mahila Kala Mahavidyalay, Chhatrapati Sambhajinagar (Aurangabad)

Address for Correspondence
Website: www.wiidrj.com
House No.624 – Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (KH), Nanded – 431605 (India – Maharashtra) **Email:** Shrishprakashan2009@gmil.com / umbarkar.rajesh@yahoo.com
Mob. No: +91-9623979067

42.	तसलिमा नसरीन के काव्य में महिलाओं की दशा एवं दिशा	प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे	145
43.	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में मुस्लिम परिदृश्य	डॉ. मिर्झा अनिसबेग रज्जाकबेग	149
44.	दहेज की समस्या : हिंदी साहित्यकारों (प्रेमचंद, चित्रामुद्गल और मैत्रेयी पुष्पा) के साहित्य में।	श्रीमती रमावती एस यादव	152
45.	चर्चा हमारा-स्त्री लेखन की चुनौतियाँ : मैत्रेयी पुष्पा	डॉ. परमेश्वर जिजाराव काकडे	156
46.	हिंदी साहित्यमें दलित स्त्री: दशा और दिशा	नाहिदा गुलाम दस्तगीर शेख	159
47.	नयी सदी की हिंदी कविता में चित्रित स्त्री जीवन	पवार प्रियंका विलास	163
48.	नारी सशक्तिकरण में महिलाओं की भूमिका	डॉ. सूर्यकांत माधवराव दळवे	166
49.	महिला सशक्तीकरण और भारतीय समाजसुधारक	डॉ. वर्षा प्रल्हाद गायगोले	168
50.	नारी विमर्श तथा उसका आधुनिक काल पर प्रभाव	स्वाती पांडुरंग खाडे डॉ. दत्तात्रय येडले	170
51.	व्यावसायिक क्षेत्रमें महिलाओं की भागीदारी – बदलते प्रतिदृश्य	डॉ. बीनू सिंह	173
52.	स्त्री स्वातंत्र्य व मराठा जातीतील विधवा महिलांच्या समस्या	सुचिता सुभाषराव ढोणे	177
53.	स्त्रियांचे स्वातंत्र्य जपणारे 18 कायदे -एक अभ्यास	प्रा. डॉ. रंजीता दत्तात्रय जाधव	181
54.	महिला विषयक कायदे	अश्विनी दिलीप डोळस प्रा. निकिता शेंडगे	188
55.	समकालीन स्त्रियांचे साहित्य : गद्य लेखन	डॉ. प्रताप गायकवाड	191
56.	थेरीगाथेतील आदर्श जीवनमूल्ये	डॉ. मोहन नाथा सौंदर्य डॉ. रेखा नारायण वाघ	193
57.	साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मराठी कादंबरीमध्ये चित्रित झालेले स्त्री जीवन	सौ. सोनार सारिका ज्ञानेश्वर	195
58.	महिलांच्या विकासात उच्च शिक्षणाची भूमिका	सीमा गुलाबराव कदम डॉ. गजानन रामकृष्णराव मुधोळकर	198
59.	कामाच्या ठिकाणी महिलांच्या समस्या	सारिका देवराव हानवते	201
60.	मध्ययुगीन भारतातील कर्तबगार महिलांचे कार्य	प्रा. डॉ. साधना बी. जावळे	209
61.	वर्तमानकालीन भारतीय स्त्रियांचा दर्जा	डॉ. साईनाथ राधेशाम बनसोडे	212
62.	मोगल साम्राज्याची महिला प्रशासक -राणी नूरजहाँ	प्रा. डॉ. सय्यद मुजीब मुसा	215
63.	महिला सक्षमीकरण आणि शासकीय धोरण: एक अभ्यास	माधव चांदु वाघमारे	218
64.	थेरेगाथेतील स्वत्वाचा विचार : स्त्रीवादी दृष्टिकोनातून चिकित्सा	अंजली मधुकरराव भंडारे डॉ. के. एम. पवार	222
65.	महिला विषयक कायदे	डॉ. सय्यद आर. आर.	225
66.	ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र विकसित करण्यात महिलांची भूमिका	श्री. संदेश बाबासाहेब घोडके डॉ. संजय लक्ष्मण भेदेकर	229

67.	लक्ष्मीकांत देशमुख यांच्या साहित्यातील 'स्त्रीचित्रण'
68.	देशाच्या आर्थिक विकासात महिलांचा सहभा
69.	महिला विषयक कायदे
70.	पेशवेकालीन स्त्री जीवन
71.	शंकरराव खरात आणि बाबूराव बागूल यांच्य साहित्यातील स्त्रियांचा अभ्यास
72.	भारतीय राजकारणात महिलांचा वाढता सह
73.	मराठी साहित्यातून चित्रित झालेले स्त्री जीव
74.	आधुनिक काळातील भारतातील महिलांची स्थिती आव्हाने
75.	वारकरी संत कवयित्री
76.	महिला आणि आरोग्य
77.	आमदार सौभाग्यवती : स्त्रियांचे राजकारण
78.	मराठवाडा मुक्तिसंग्रामात महिलांचे योगदा
79.	भारतीय महिला अधिकार : मानवी हक्क अ वास्तविकता
80.	भारतातील स्त्रियांची स्थिती आणि आव्हाने
81.	महाराणी चिमणाबाई यांच्या सामाजिक स
82.	समाजसुधारकांचे स्त्री शिक्षण विषयक विच कार्य
83.	मानवी हक्क आणि महिला सुरक्षा कायदे
84.	'काव्यफुले'तील सामाजिक कविता : एक अ
85.	महिलांचा राजकारणात वाढता सहभाग
86.	बौद्धकालीन स्त्रियांची सामाजिक स्थिती
87.	समकालीन मराठी लेखिकांचे कथालेखन
88.	स्वातंत्र्योत्तर काळातील राष्ट्र निर्मितीमधे महिलांचे योगदान
89.	संकल्पना चित्रण पध्दतीने मध्ययुगीन भा कर्तबगार महिलांचे कार्य अभ्यासणे
90.	प्राचीन भारतातील महिलांची स्थिती व
91.	महाराणी ताराबाई चे मध्ययुगीन इतिह स्थान
92.	भारतीय समाजातील महिलांची स्थिती आव्हाने

व्यावसायिक क्षेत्रमें महिलाओं की भागीदारी – बदलते प्रतिदृश्य

डॉ. बीनू सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर अर्थशास्त्र, बी. एम. रूइंयागर्ल्स कॉलेज, गामदेवी, मुंबई 400007

सारांश

महिलाएं किसी भी देशकी अर्थव्यवस्था के प्रतिबिंब होती है। किसी भी देशकी महिलाओं की स्थिति को देखकर आप उसे देश की प्रगतिका अनुमान लगा सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य महिलाओं की व्यावसायिक आर्थिक कार्यक्षेत्र में भागीदारी के बदलते परिदृश्य को ज्ञात करना है। 2000 से लेकर 2022 तक महिलाओं के विभिन्न क्षेत्रोंमें भागीदारी के कारण और परिणामपर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

उद्देश्य

1. महिलाओं की व्यावसायिक कार्यक्षेत्र में भागीदारी को ज्ञात करना।
2. बदलते परिदृश्य में भागीदारी के कारण ज्ञात करना।
3. भागीदारी के परिणाम ज्ञात करना।

शोधविधि -

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक अध्ययन पद्धति के आधारपर द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से लिखा गया है। द्वितीयक आंकड़ोंका एकत्र आर्थिक सर्वेक्षण तथा सरकारी और गैर सरकारी प्रकाशनों से एकत्र किया गया है। यह शोधपत्र विद्यार्थियों, शोधछात्र, अध्यापकों तथा नीति निर्माता के लिए महत्व पूर्ण है।

भूमिका

मानव बुद्धि और शक्तिवाले एक बुद्धिमान व्यक्तिने एक बार कहा था" किसी राष्ट्र की प्रगति का सबसे अच्छा उपाय है कि वह अपनी महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार करता है।" सदियों से महिलाओं ने चुनौतियों का सामना किया है और इससे उन्हें असीम धैर्य दृढ़ता मिली है और इससे उन्हें मजबूत होकर उभरने में मदद मिली है। महिलाओं की व्यावसायिक क्षेत्र में भागीदारी की स्थिति उसे देशके आर्थिक विकास का प्रतिबिंब होती है। देशकी संपूर्ण जनसंख्या के आधे भाग का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी का काफी कम रही है। यद्यपि वर्तमान समय में बहुत से क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधेसे कंधा मिलाकर चल रही हैं, परंतु आजभी लैंगिक असमानता, वेतन में भेदभाव आदि असमानताएं हमें देखने को मिलती हैं। आज लोगोंके महिलाओं के प्रतिदृष्टिकोण में काफी परिवर्तन आया है, परंतु हर अंधेरे के बाद जैसे उजाला आता है वैसे ही भारतीय समाजमें महिलाओं की आर्थिक क्षेत्रकी भूमिका में लगातार सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं जिस के परिणाम स्वरुप अर्थव्यवस्था का बहुआयामी विकास हो रहा है। कृषिक्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लगभग 60% है परंतु इनमें से अधिकांश भूमिहीन श्रमिक है जिन्हें स्वास्थ्य, सामाजिक व आर्थिक सुरक्षासे संबंधित कोईभी सुविधा प्राप्त नहीं होती है। वर्ष 2019 में मात्र 13% महिला किसानों के पास अपनी जमीन थी और वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यह प्रतिशत केवल 12 था।

संबंधित साहित्यका अध्ययन -

नलिनी गुलाटी तथा इलास्पेंसरने (मार्च 2022) अपने लेख महिलाओं की राजनीति में भागीदारी : नेता और नागरिक में लिखा है कि भारत की आर्थिक कार्यक्षेत्र में भागीदारी में भारत का स्थान 149th है। उन्होंने महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण को बढ़ाने के लिए भारत में 1992 के 73 में संविधान संशोधन जिसके अंतर्गत ग्रामपंचायत में महिलाओं की एक तिहाई भागीदारी को एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

काउंसिल फॉर फॉरेनरिलेशंस – वूमेन एंड फॉरेन पॉलिसी (2017) मै महिलाओं की आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी और समृद्धि के बीच संबंधको दर्शाया गया है जिसमें कि पिछले दो दशक में अंतरराष्ट्रीय संगठनों तथा जी 20 में बताया गया कि महिलाओं के आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी से गरीबी कम होती है तथा सतत विकास के लक्ष्यों प्राप्त करने में मदद मिलती है जिस में कहा गया कि जैसे – जैसे मानव विकास में लैंगिक असमानता में कमी आती है वैसे – वैसे ही समृद्धि अपनी आप अपना स्थान ले लेती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका तथा आर्थिक स्थिति

भारत में महिला रोजगार संबंधी आंकड़े देश के आर्थिक विकास, कम प्रजनन दर और स्कूली शिक्षाकी दर में वृद्धि जैसे संकेत से मिल नहीं खाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रोंमें कार्य स्थलपर महिलाओं की भागीदारी 30.58% से घटकर 28.4% रह गई है । 2019 में विश्व आर्थिकमंच की बेसिक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट में महिलाओं की आर्थिक और भागीदारी और इसके लिए उपलब्ध अवसरों के संदर्भ में भारत को 153 देशकी सूची में 149 में स्थानपर रखा गया था जिस में भारत एक मात्र ऐसा देश था जिसमें आर्थिक भागीदारी में लैंगिक अंतरालसे अधिक पाया गया।

महिलाओं की स्थिति	वर्ष 1991	वर्ष 2001
जीवन प्रत्याशा	62.2	63.3
साक्षरतादर (प्रतिशत में)	39.3	54.2
मातृत्व मृत्युद (रप्रति लाख जन्मपर)	437	407
लिंग अनुपात	927	933
कार्यक्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी (प्रतिशतमें)	22.3	25 .7
वेतन विभेद	15.83	20.38
प्राथमिक क्षेत्र में कार्य	77	76.2
द्वितीयकक्षेत्रमेंकार्य	10.9	11.8
तृतीयक क्षेत्र में कार्य	11.4	12
संगठित क्षेत्र	20	23
असंगठित क्षेत्र	80	77
स्वर्ण जयंती ग्रामीण रोजगार योजना	44.62	52.41

दहेज के लिए हत्या	6208	6787
दोषियों को सजा %	32.4%	33.4
बलात्कार	15847	18359
दोषियों को सजा %	26.1	25.5
प्राथमिक शिक्षा	52.9	65
माध्यमिक शिक्षा	28.9	32
उच्च शिक्षा	11.7	14.8

Source : National Sample Survey Organisation .

कार्यक्षेत्र में भागीदारी को बढ़ाने के लिए सुझाव

महिलाओं के व्यावसायिक कार्यक्षेत्र में भागीदारी को बढ़ाने के लिए विभिन्न अध्ययनों के आधारपर निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं -

कार्य का चुनाव – महिलाओं को बचपन से ही अपने रुचिके अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। सामान्य रुपसे यह देखा गया है कि महिलाओं के जन्म के समय से ही उनके व्यवसाय का चुनाव उनके माता-पिता द्वारा कर लिया जाता है।

कार्य करने की दशाएं - कार्यक्षेत्र की दशाओं में सुधारकरके भी महिलाओं के आर्थिक कार्य में भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है। आजभी बहुत सारे स्थानपर महिलाओं के कार्य करने की दशाएं अमानवी है, जिसके कारण महिलाओं को कार्य छोड़ने पर विवश होना पड़ता है।

वैधानिक और नीति संबंधी सुझाव. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरपर द्विपक्षीय स्तरपर संयुक्त राष्ट्रसंघ और भारत में महिलाओं के आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए महिलाओं के आर्थिक भागीदारी को आर्थिक सशक्तिकरण और महिलाओं के आर्थिक उन्नतिके प्रोत्साहन के साथ जोड़ा जाना चाहिए जिससे कि महिलाओं के आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी में वृद्धि हो।

महिलाओं को पूंजी और वित्तीय सेवाओं को प्रदान करने की सुविधा. महिलाएं यदि अपना खुदका व्यवसाय प्रारंभ करना चाहे तो सरकार को उन्हें पूंजी की सुविधा प्राथमिकता के आधारपर प्रदान की जानी चाहिए जिससे कि उनकी आर्थिक स्तरमें वृद्धि हो। समेकित विकास के लक्ष्यको तभी प्राप्त किया जा सकता है जब महिलाओं को पूंजी और वित्तीय सेवाओं की उपलब्धता आसानी से हो सके।

महिलाओं के लिए विशेष आर्थिक समेकन कोशकी स्थापना करना – महिलाओं के आर्थिक कल्याण में वृद्धि तथा आर्थिक क्षेत्र में उनकी भागीदारीथा को बढ़ाने के लिए सरकार को महिलाओं के लिए एक विशेष आर्थिक फंडकी स्थापना करनी चाहिए, जिस में कि केवल महिलाओं को ही उद्यमशीलता की वृद्धि के लिए विशेष रूप से ऋण प्रदान किया जा सके जिससे कि उनकी उद्यमशीलता की प्रवृत्तिको विशेष प्रोत्साहन मिले।

राजनीतिक व सामाजिक जागरूकता अभियान प्रारंभ करके –महिलाओं के आर्थिक कार्यक्षेत्र में वृद्धि के लिए आवश्यक है कि राजनीतिक व सामाजिक जागरूकता अभियान प्रारंभ किए जाएं जिसके माध्यमसे महिलाओं को स्वावलंबी बनाने में मदद मिले। आज भी हम पार्लियामेंट में महिला ओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा बहुत कम देखते हैं जिसका प्रमुख कारण आज भी समाजमें महिलाओं को दोहरी दर्जे के नागरिक का स्थान प्राप्त होना है।

7. शिक्षा के अवसरों में सुधार करके – महिलाओं की शिक्षाके स्तर में सुधारकरके उनकी आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है। अगर शिक्षा व्यवस्था अच्छी होगी तो महिलाओं को रोजगार प्राप्त करने में आसानी होगी जिससे कि उनका आर्थिक स्तर, स्वावलंबन बढ़ेगा और वह समाज में सर उठाकर जीवन यापन कर सकेंगे।

8. बच्चों की देखभाल के लिए कार्यस्थल के साथ शिशु पालन घरकी स्थापना करना – अधिकांश महिलाएं अपना कार्य बच्चों की वजहसे लगातार नहीं कर पाती हैं अतः आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं के कार्यक्षेत्र में भागीदारी को बढ़ाने के लिए उनके कार्यक्षेत्र से जुड़े हुए शिशु देखभाल ग्रह अनिवार्य रूपसे स्थापित किए जाएं जिससे कि महिलाएं भी अपनी कार्य को सुचारू रूपसे जारी रख सके।

9. पुरुष प्रधान समाजकी मानसिकता में परिवर्तन करके – समाज में महिलाओं की आर्थिक स्थितिको सुधारने के लिए आवश्यक है कि पुरुष प्रधान समाजकी मानसिकता में परिवर्तन आए और यह परिवर्तन घरसे ही प्रारंभ होता है। अगर पुरुष अपने घर में महिलाओं का सम्मान देखते हैं तो वह भी महिलाओं का सम्मान करना सीखने लगते हैं अतः आवश्यक है कि इस पुरुषप्रधान समाजमें महिलाओं के प्रति पुरुषों के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन लाया जाए।

10. मातृत्व अवकाश में वृद्धि करके – मातृत्व अवकाश में वृद्धिकर के महिलाओं के कार्यक्षेत्र में भागीदारिकता को बढ़ाया जा सकता है। अधिकांश महिलाएं अपना काम बीच में इसलिए छोड़ देती हैं क्यों कि छोटे बच्चोंकी देखभाल के लिए कोई नहीं रहता है, अतः यदि महिलाओं के मातृत्व अवकाश को 6 महीने से बढ़कर 12 महीने कर दिया जाए तो अधिकांश महिलाएं अपंने काम को बीचमें ही छोड़ने को विवश नहीं होगी तथा अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकेंगे।

11. सुरक्षित परिवहन व्यवस्था की उपलब्धता प्रदान करके – कईबार महिलाएं घरसे दूर काम करने को इसलिए नहीं जा सकती क्यों कि सुरक्षित परिवहन व्यवस्था की उपलब्धता नहीं होती इस लिए आवश्यक है कि परिवहन व्यवस्था की उचित व्यवस्था करके महिलाओं की सुरक्षा में वृद्धि करके उनकी आर्थिक क्षेत्र में भागीदारिता को बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष -

इस प्रकारसे महिलाओं के कार्यक्षेत्र में कम भागीदारी का प्रमुख कारण हमारे समाजकी दकियानूसी प्रवृत्तियां तथा पुरुषप्रधान समाज का होना है। समाज में उनकी खराब स्थितिका प्रमुख कारण घरसे ही प्रारंभ होता है अधिकांश माता-पिता महिला और पुरुष में हमेशा विभेद करते हैं जिसके कारण कार्यक्षेत्र में उनकी भागीदारिकता कम होती है। विवाह की अनिवार्यता के कारण अधिकांश लड़कियों को अपना रोजगार कईबार छोड़देना पड़ता है जिससे कि उनकी आत्मनिर्भरता में कमी आती है। वर्तमान समय में देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के साथ कार्यस्थलों पर व्याप्त भेदभाव और महिला सुरक्षा संबंधी चुनौतियों को दूर करने के लिए बहुपक्षीय प्रयासों को अपनाया जाना चाहिए। उसे शिक्षा और कृषि व प्रशिक्षकों में शामिल होने के लिए महिलाओं को सहयोग प्रदान करने के साथ ग्रामीण क्षेत्रोंमें उच्च शिक्षा की पहुंचको मजबूत करने के लिए विशेष ध्यान देना होगा इसके साथ ही नीति निर्माण और महत्व पूर्ण संसाधनों के शीर्षतंत्र में महिला प्रतिनिधित्व को बढ़ाने हेतु विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. drishtias.com
2. https://samareducation.com
3. https://www.worldbank.org
4. https://ciiblog.in
5. https://economictimes.com
6. aaicte-india.in

ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-4 Issue-29

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.4 Issue-29 July-Aug 2023

International journal of advance and applied research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

Volume-4 Issue-29

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association, Kolhapur(M.S), India

Editorial & Advisory Board

Dr. S. D. Shinde	Dr. M. B. Potdar	Dr. P. K. Pandey
Dr. L. R. Rathod	Mr. V. P. Dhulap	Dr. A. G. Koppad
Dr. S. B. Abhang	Dr. S. P. Mali	Dr. G. B. Kalyanshetti
Dr. M. H. Lohgaonkar	Dr. R. D. Bodare	Dr. D. T. Bornare

Published by: Young Researcher Association, Kolhapur, Maharashtra, India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.4 Issue-29 July-Aug 2023

CONTENTS

Sr No	Paper Title	Page No.
1	Assessment of Nickel in Kallur Lake Ismalpur, at Udgir, Dist.Latur **Narkhede R.K, Patwari J.M**	1-3
2	Affixation in English: A Morphological Approach **B. Jothimeena, Dr. M. Ramesh Kumar**	4-11
3	"A Critical Analysis of Pessimistic Influence of Mobile Phone Uses on Children's Health in Amravati District of Maharashtra State" **Lumbini Haridas Ganvir**	12-17
4	The Advantage of Psychological Androgyny for Mental Health **Dr. Kumari Sandhya**	18-22
5	The Role of Self-Help Groups (SHGs) in the Empowerment of Women in Rural India **Hanmant Ashok Wanole**	23-31
6	The Study of Population Growth and Distribution in Sangli District **Dr. Ankush Shankar Shinde, Miss Swati Dnyaneshwar More**	32-37
7	Cross-Linguistic Vowel Challenges: Implications for English Pronunciation among Tamil Speakers **Uma P, Dr. G. Shanmugam**	38-45
8	Building Resilience: Exploring the Interplay of Workplace and Academic Buoyancy **Kanu Priya**	46-55
9	Landlessness in India: An Indicator of Increasing Socio-Economic Inequality **Lt. Dr. Rajshekhar K. Nillolu**	56-58
10	Pros and Cons of Online Learning in Higher Education **Dr. Saroj Yadav, Dr. Dinesh Singh**	59-62
11	Unveiling the Persistent Issue of Gender Discrimination in Different Societies **Dr. Anjani Kumari Singh**	63-65
12	In silico Characterization of dragline silk proteins from the spider, Trichonephila clavipes using Computational Tools and Servers **Deepali Sangale, Sandip Chordiya, Vitthal Nale**	66-73
13	Experiences of Participants practicing Anapan sati (Progressive Relaxation via Breathing Technique) prior to Counselling session **Jyoti Kamble, Pravin Shantaram Gangurde**	74-79
14	An analytical study on Mathematics education at primary level in Delhi **Dr. Geeta Tiwari**	80-86
15	Cultural Transformation of the Indigenes: Basel Mission Approach at Kanara **Nandakishore S**	87-89
16	"E- Rupee: Tap and Transact" A Study With Reference To Bankers' Preparedness in Mangalore **Nehila Farveen P, Sameeksha K V**	90-97
17	Frustration, Power, and Compassion: An Analysis of the Short Story 'Oh! The Public' by Anton Chekhov **P. Uma**	98-104
18	Application of Open Source Software in Libraries **Chaudhari Balaji Sureshrao**	105-108
19	An Update on Zollinger-Ellison Syndrome **Boddula Mahathi, Dr. Syeda Nishat Fathima**	109-112
20	Challenges in Implementation of NEP for Teachers With Reference To Higher Education **Asst.Prof.Bhavika Makhija**	113-118
21	Supporting Handicapped Persons in the Library Environment with the Help of Adaptive Equipment Technology **Dr. Rishi S. Gajbhiye**	119-121
22	Commercial Banks' Assets Portfolio-Post Globalization –A Descriptive Analysis **Dr. Mrs.Beenu Singh**	122-126
23	Structure And Composition of the Sex Ratio a case study of Latur District, Maharashtra **Dr. Mukesh Jaykumar Kulkarni**	127-130
24	Urban Cooperative Banks in India: Problems and Future **Dr. Prakash Ratanlal Rodiya, Mr. Swapnil Hiralal Sakhla**	131-134

25	Empower District i
26	A Geogra
27	Current s
28	A Scrutin
29	Temporal
30	A Study (
31	The Evil
32	A Study c
33	A Review
34	Equity Ho Indian Co
35	The Cruci
36	Religion T
37	Role Of In
38	A Study o
39	Physiologi
40	Racism, Id
41	Linkage be

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.29 July-Aug 2023

Commercial Banks' Assets Portfolio-Post Globalization –A Descriptive Analysis

Dr. Mrs.Beenu Singh
Designation-Associate Professor of Economics
Organization-B.M. Ruia Girls' College
Gamdevi Mumbai 400007
Corresponding Author- Dr. Mrs.Beenu Singh
Email– beenuasingh@hotmail.com
DOI-10.5281/zenodo.8365370

Abstract

The banking sector is the lifeblood of the Economy. We can assess any country 's financial health by the condition of the banking sector of the country. The main aim of a commercial bank is to seek profit along with maximum social welfare. Its capacity to earn profit depends upon its investment policy. Indian commercial banking sector has to land priority sector of the economy to maximize social welfare activities and on the other hand, they have to earn profit for survival. They have to keep their assets in such a manner in which they manage its investment portfolio. they have to manage their assets portfolio to earn maximum profit along with profitability and liquidity. The present paper is an attempt to find out the analysis of the government sector banking sector's assets portfolio after globalization and implementations of Narsimham committee reports from the year 1991 and will try to find out the facts behind the failure of the banking sector of the government sector.

Key Words- Financial literacy, individuals' responsibility, mobilization of resources, financial goals.

Objective of Study

1. To better understand the commercial bank's assets portfolio.
2. To measure the actual condition of the Indian banking sector.
3. To understand the result of priority sector landing on the financial health of a bank.
4. To suggest some points to adjustment between profitability and liquidity.
5. To know about the result of mismanagement of assets portfolio.
6. To suggest some measures to improve the financial health of public sector banking in India.

Research Methodology

This paper is descriptive in nature based on secondary sources of data and articles published in different publications of RBI and different publications. The sample size is very small so we cannot make any final conclusion.

Introduction

Commercial banks play very important role in development of a country. So its called life blood of a country. Sound ,progressive and dynamic banking system is a basic requirement for economic development. As an important segment of the tertiary sector of an economy, commercial banks act as the backbone of economic growth and prosperity by acting as a agent in the process of development (Shrestha, 2015).They inculcate the habit of saving and mobilize funds from numerous small households and business firms spread over a wide geographical area. The funds so mobilized are used for productive purposes in agriculture ,industry and trade. The banks have to manage their assets in such a way that they can manage balance between profitability ,liquidity and safety. Priority sector landing is not profitable ,but banks have to invest their 40% assets for priority sector landing. For liquidity purpose they used to keep 5-10% as CRR and 15-25% as SLR .So for sustainable banking system they have to manage their assets such a way so they can ful-fill their long term goal.

Present paper is an attempt to find out asset management system between 1991and 2018. Present papers is a attempt to

find out the analysis of government sector banking sectors 's assets portfolio after globalization and implementations of Narsimham committee reports from year 1991 and will try to find out the facts behind failure of banking sector among government sector. India's banking sector has been facing a large overhang of balance sheet stress since 1990.this research paper can be of particular interest to bank management, as the managers can employ this analysis to identify the relative position of their banks in relation to their international competitors .The finding can be useful for developing countries under the same scenarios.

Concept of assets portfolio management

The main aim of a commercial bank is to seek profit like any other institution. Its capacity to earn profit depends upon its investment policy. Its investment policy, in turn, depends on the manner in which it manages its investment portfolio (Chand, 2017) Thus "commercial bank investment policy emerges from a straight forward application of the theory of portfolio management to the particular circumstances of commercial bank." Portfolio management refers to the prudent management of a bank's assets and liabilities in order to seek some optimum combination of income or profit, liquidity, and safety.

When a bank operates, it acquires and disposes of income-earning assets. These assets plus the bank's cash make up what is known as its portfolio. A bank's earning assets consist of (a) securities issued by the central and state governments, local bodies and government institutions, and (b) financial obligations, such as promissory notes, bills of exchange, etc. issues by firms. There earning assets constitute between one-fourth and one-third of a commercial bank's total assets. Thus a bank's earning assets are an important source of its income.

The manner in which banks manage their portfolios, that is acquiring and disposing of their earning assets, can have important affects on the financial markets, on the borrowing and spending practices of households and businesses, and on the economy as a whole.

In order to be able to meet demand for Cash as and when they are made a bank must not only arrange to have sufficient cash available but it must also distribute its assets in such a way that some of them can be readily converted in to cash. thus the bank cash reserve can be reinforced quickly in the event of heavy drawings. on them.Assets which are easily convertible in to cash are called liquid assets, the most liquid being cash itself, the shorter the length of a loan, the more liquid because it will soon mature and be repayable in cash, the less profitable because other things being equal (S, 2015) .The rate of interest varies directly with the loss of liquidity .Thus a bank faces something of a dilemma in trying to secure both liquidity and profitability. It satisfies these apparently in compatible requirements in the way it distribute its assets. These assets have been arranged in such a way the most liquid but least profitable ones should be very less and least liquid but most profitable should be more.

Structure Of Financial Assets Of Commercial Banks

GREATER	ASSETS	LEAST
L	CASH IN HAND	P
I	CASH IN CENTRAL BANK	R
Q	MONEY AT CALL ON SHORT	O
U	NOTICE	F
I	BILL DISCOUNTED	I
D	GOVERNMENT SECUIRITIES	T
I	WITH ONE YEAR MATURITY	A
T	CERTIFICATE OF DEPOSITES	B
Y	INVESTMENTS	I
	LOAN AND ADVANCES	L
		Y
		GREATER
LEAST		

Cash in hand-

It represents a banks holding of notes and coins to meet the immediate requirements of its custermers.Nowadays ,there is no limit set on the amount of cash which banks in India must hold and it is taken for granted that they will hold enough to maintain their depositors confidence. Before 1991 it was10% of total assets but now it is 4% of total assets in form of cash.

ʒations, such as promissory
ꞏxchange, etc. issues by firms.
ıssets constitute between one-
third of a commercial bank's
s a bank's earning assets are
rce of its income.
ıer in which banks manage
that is acquiring and
earning assets, can have
on the financial markets,
ınd spending practices of
ꞏusinesses, and on the

ɔe able to meet demand
n they are made a bank
ꞏ to have sufficient cash
st also distribute its
:hat some of them can
to cash. thus the bank
ıforced quickly in the
ıgs. on them.Aseets
tible in to cash are
most liquid being
ıe length of a loan,
t will soon mature
the less profitable
ʒ equal (S, 2015)
directly with the
: faces something
to secure both
satisfies these
irements in the
ꞏse assets have
he most liquid
l be very less
ble should be

is
h

Cash at the central Bank-

It represents the commercial banks accounts with the central bank. When banks in India require notes or coins ,they obtain from central bank by drawing on their account ,there in the same way as their customer obtain it from them. The bank also use their central bank account for setting debts among themselves. This process is called as the clearing system.

Money at call and Short Notice-

Money at call consists mainly of day – to day loans to the money market and also includes seven days and fourteen day loan to somebody and to the stock exchange. This asset is by naturevery liquid and unable a bank recall loans quickly in order to reinforce its cash. Being short period of time these assets carry a very low rate of interest , consequently they are not very profitable.The money market consists of discount houses in bill of Exchange.

These bills may be commercial bill or treasury bills. A bill is a promise to pay a fixed amount in given period of time, thus a firm or treasury can borrow money by issuing by promise to pay in three months.A discount house may buy such a bill at a discount rate.

Investments:

These consist mainly of government stock which is always marketable at the stock exchange, even though a loss may be involved by a sale at an inopportune moment. The classification of investments as more liquid than advances can be justified by the greater ease with which investments can be converted into cash, for the latter, although they can technically be recalled at a moment's notice, can in fact only be converted into cash if the borrower is in a position to repay, and, of course, at the risk of the bank losing its customer if any inconvenience is caused.

Loans and Advances

These are the most profitable assets of commercial banks .These assets have maturity period of 1 years to 20 years.Banks earn higher interest rate on these assets . They are the principal component of bank assets and the main source of income of banks. Collectively, they represent total 'bank credit' (to the commercial sector). Nothing more need be added here, bank advances in India are usually made in the form of cash credit and overdrafts. Loans may be demand loans or term loans. They may be repayable in single or many installments. We explain briefly these various forms of extending hank credit.

Fund Management is carried out with the primary objective of generating optimum yields for the client by investing in a judicious mix of various securities like Central Government Securities, State Development Loans, Corporate Bonds (PSU and Private), Fixed Deposits, Money Market Instruments and equity (if permitted by the Client).The three pillars of investment strategy adopted by the PMS section are: (wabsite, n.d.)

(i) Safety, (ii) Yield, and (iii) Liquidity.

Litrature Review

Assets management is a generic term that is used to refer to a number of things by different market participants. The principal objective of the functio Assets management n is to manage interest-rate risk and liquidity risk. It also sets overall policy for credit risk and credit risk management, although tactical-level credit policy is set at a lower level within credit committees. Although the basic tenets of would s Assets management seem to apply more to commercial banking, rather than investment banking, in reality it is important that it is applied to both functions. A trading desk still deals in assets and liabilities, and these must be managed for interest rate risk and liquidity risk. In a properly integrated banking function, the desk Assets management will have a remit covering all aspects of a bank's operations. (Lina Novickytèa*, 2014)

Assets management deals with the optimal investment of assets in view of meeting current goals and future liabilities. Choudhry (2007) said, that the definitions of assets, liabilities, and risks are specific to each institution, but, very generally, assets may be viewed as expected cash flows, and liabilities as expected cash outflows. Although short-term risks arising from the possibility that an institution's assets will not cover its short-term obligations are important to assess and quantify, is Assets management usually conducted from a long-term perspective. As such, Assets management is considered a strategic discipline as opposed to a tactical one.

Mitra & Schwaiger (2011) explain, that Assets management is a financial (analytic) tool for decision making that sets out to maximize stakeholder value. Its overall objective is to make judicious investments that increase the value of capital, match

liabilities and protect from disastrous financial events. An integrated asset and liability management model sets out to find the optimal investment strategy by considering assets and liabilities simultaneously. Simply stated, the purpose of such an approach is to reduce risk and increase returns.

Assets management is a future oriented process involving simultaneous asset and liability management to measure, monitor and control the impact of changing interest rates on the bank's earnings, asset value, liquidity and capital requirements (Brick, 2012). Summarize, the Assets management is simply combines several bank portfolios - asset, liabilities, and the difference between the banks received and interest paid - management processes into a single coordinated process. In other words, the main feature of the Assets management is coordinated and not broken the total bank's balance sheet management. Assets management as a planning tool has evolved from the need to ensure the asset and liability time overlap for different time periods. Nowadays this process is much more complex, overlapping terms to ensure interest rate management using both static and dynamic simulations.

The main Assets management purpose is to connect different bank activities into a single unit, facilitating liquidity and balance sheet management, which is crucial for ensuring the normal operation of the bank, service delivery and consistent and profitable growth of the bank. Assets management provides timely identification potential problems and risks of operating in the bank's balance sheet and income. The most common problem occurs when the bank's liability costs are rising faster than revenues from the asset, or when falling interest rates asset income is declining faster than the liability side.

Birge & Judice (2013) research results enable simulation of bank balance sheets over time given a bank's lending strategy and provides a basis for an optimization model to determine bank Assets management strategy endogenously. Liquidity management feature is not limited to the management of liquidity gaps. Comprehensive process involves the determination of policy and liquidity, contingency resolution plans and liquid asset holding, ensuring liquidity risk in the desired level.

Balance Sheet AnalysisC

ASSETS	MARCH 1991	MARCH 2003	MARCH 2018
CRR(cash researve ratio)	17.6	4.50	4.8
SLR(statutory liquidity ratio)	38.5	10.25	5.20
Loans	39.2	49.64	57.26
Investment	4.7	34.64	25.76
Bills, Money at call	0.2	0.70	3.04
NPA	24.8	25	14.6

Sourse-Different issues of statistical Tables relating to Banks in India,RBI Publication.

NPA of public sector banks

In percentage

YEAR	PRIORITY SECTOR	NON-PRIORITY SECTOR	PUBLIC SECTOR	TOTAL
2005	45.2	53.5	1.2	100
2006	53.8	44.2	2.1	100
2007	58.0	40.2	1.9	100
2008	61.5	37.1	1.4	100
2009	53.8	45.6	0.7	100
2010	50.9	48.6	0.5	100
2011	53.8	45.9	0.3	100
2012	47.6	50.2	2.3	100
2013	40.9	58.4	0.7	100
2014	35.2	64.8	0.1	100

2015	34.7	65.2	0.1	100
2016	23.3	76.2	0.6	100
2017	23.5	74.2	2.3	100

Source-Calculation based on RBI publication.

The source of stress in the banking system coming primarily from the large corporate sector. During 2016-17 more then 128167 crore corporate loans were subject to restructuring, out of which Rs.77039 crores were classified as doubtful Assets and more than Rs 81883 crores as sub –slandered assets. On the other side loan (excluding corporate loans) that were subject to restructuring during 2016-17 ,the volume of corporate loans disbursed by PSB(public sector banks)that went through restructuring stood at about Rs.113104 crores,out of these ,more then Rs 8107 crores were form of sub slandered assets and Rs 68540 crores in the form of doubtful assets.

The deterioration in asset quality as reflected in rising NPAs can adversely impact the performance of the banking sector by reducing profitability and squeezing the liquidity, which in turn is likely to impact the solvency position of banks .In the backdrop of rising NPA ,the decline in profitability of banks further be substantiated with the declining interest earnings of the banks.The ratio of interest income to total assets declined from 12.8% in 2005 to 7.5% in 2017 and net interest margin also declined from 5.48% in 2005 to 2.4 % in 2017.

Conclusion / suggestion:

There is urgent need for improvement. India is set to be a global leader in coming year .India's' highest saving rate and efficiency of regulation by RBI has provided stability. The paper attempted to evaluate the reforms that have occurred in the Indian banking sector, its assets portfolio and NPA of banks and deteriorating health of commercial banks (ROLAN, 2015). Since India has decided to move towards a more market based system, it is now important for policy makers to create the condition of well functioning of a market based banking system. Among the necessary tasks are the building and strengthening of the necessary institutions like oversight bodies. According to slandered regulations as well as the further restructuring and privatization of PSBs.If India continues on its current path of banking sector liberalization ,it should be in a position to future strengthen its banking system, which will be vital to support its economic growth in the years to come.

Bibliography

1. http://easybankingtips.com/financial-literacy-india-statistics.
2. Anurag.P And H. Farhad, Arun.T,(2010) Financial Inclusion And Social Protection:
3. A Case For India Post, Competition And Change, Vol. 14 No. 3–4, 324–42 .
4. C.Thilakam, Manonmaniam(2012), Financial Literacy Among Rural Masses In India,The International Conference On Business And Management6 – 7 September 2012, Phuket – Thailand,
5. Cutler.Neal. E,(2013) Financial Gerontology Journal Of Financial Service Professionals
6. Financial Education Middle Income Group, Securities and Exchange Board of India
7. J.Tullio,Financial Litreacy(2009) Discussion Paper 09/2010-06
8. http://Indiabudget.Nic.In/ Economic Survey 2012-13
9. http://www.hindustantimes.com/business news/financial-literacy-in-india-very-low-sayssurvey/article1-1102468.aspx
10. http://www.oecd.org.
11. Different issues of RBI publication-RBI BULLETTINE Year 1996-2018.
12. Statistical Tables Relating to banks in India-different issues.

ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-4 Issue-30

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

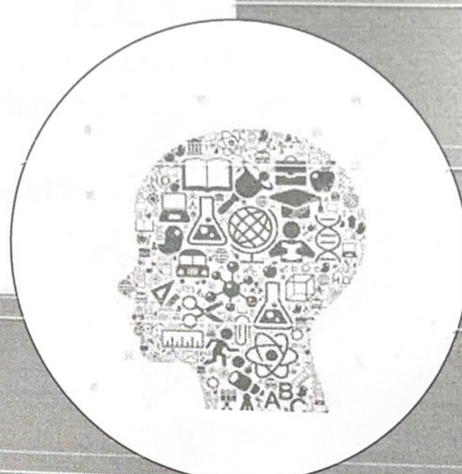

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

ternational Journal of Advance
d Applied Research (IJAAR)
er Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.4 Issue-30 July-Aug 2023

International journal of advance and applied research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

Volume-4 ***Issue-30***

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association, Kolhapur(M.S), India

Editorial & Advisory Board

Dr. S. D. Shinde	Dr. M. B. Potdar	Dr. P. K. Pandey
Dr. L. R. Rathod	Mr. V. P. Dhulap	Dr. A. G. Koppad
Dr. S. B. Abhang	Dr. S. P. Mali	Dr. G. B. Kalyanshetti
Dr. M. H. Lohgaonkar	Dr. R. D. Bodare	Dr. D. T. Bornare

Published by: Young Researcher Association, Kolhapur, Maharashtra, India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

	A Case Study on the Significance of Self-Help Groups for Rural Empowerment of Women in India V.A. Ragavendran	85-88
	The Challenges Faced By Rural Women in Accessing Education in Bengal Dr. Nabanita Das, Mrs. Ipsita Chakraborty	89-92
	Tribal Women Empowerment and India Government Mrs. Satabdi Mondal	93-95
	भारतीय राजकारणातील महिलांचे सक्षमीकरण गजानन संग्राम हुंडे	96-99
	पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन में महिलाओं की भूमिका अमिता कृष्णा महातळे (विरुटकर)	100-102
	भारतीय महिला सशक्तीकरण में संगीत की भुमीका प्रा. दिपक महादेव जामनिक	103-105
1	मानवी हक्क आणि भारतीय स्त्री डॉ. दिनेश सहदेवराव धाकडे	106-109
32	झाडीपट्टीची लोककलाभट्टी 'दंडार' आणि त्यामधिल स्त्री पात्रांचे दुःखपदर डॉ धनराज ल.खानोरकर	110-114
33	मराठी कवयित्रींच्या काव्यातील स्त्रीवाद -- एक दृष्टिक्षेप डॉ.पद्माकर डिगांबर वानखडे	115-118
34	महिलांचा सामाजिक विकास आणि महिला सक्षमीकरण डॉ. कीर्ती आ. वर्मा	119-122
35	उषःकाल ' या विज्ञानकथेतील स्त्रीमनाचा संघर्ष : एक वेध सुनीता प्रदिप रंगारी, डॉ. राजेंद्र वाटाणे	123-126
36	ग्रामीण भागातील स्त्रियांचे सक्षमीकरण -एक आव्हान डॉ.पल्लवी साहेबराव काळे (ग्रंथपाल)	127-129
37	ग्रामीण भागातील स्त्रियांच्या मूलभूत समस्या व उपाय योजना डॉ.अरुणा मधुकर वाघमारे	130-132
38	भारत के विशेष संदर्भ में कार्यकारी महिलाओं की समस्याएं तथा उनका समाधान डॉ.बीनू सिंग	133-135
39	भारतातील ग्रामीण भागातील स्त्रीयांच्या समस्या व उपाययोजना डॉ रंजना वि. तिजारे	136-138
40	ग्रामीण समाजातील स्त्रियांच्या आर्थिक, सामाजिक व राजकीय समस्यांचे विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रा. विजय शामराव कांडलकर	139-141
41	भारतीय आदिवासी स्त्रियांचा सामाजिक व रुढीगत दर्जा धैर्यशील मारुती जाधव	142-143
42	महिलांचे अधिकार आणि महिला सबलीकरण प्रा. डॉ. एन. एस. गेडाम	144-146

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.30 July-Aug 2023

भारत के विशेष संदर्भ में कार्यकारी महिलाओं की समस्याएं तथा उनका समाधान

डॉ. बीनू सिंग
सहयोगी प्राध्यापक अर्थशास्त्र, बीरुईया गर्ल्स कॉलेज रामदेवी .एम., मुंबई 400007
Corresponding Author- डॉ बीनू सिंग

प्रस्तावना:-

कार्यकारी महिलाएं वह महिलाएं हैं जो घर की रोज की जिम्मेदारियों को उठाते हुए धन अर्जन के लिए घर से बाहर भी कार्य करती है। भारत में इन महिलाओं को कार्य के दोहरे जिम्मेदारी का सामना करना पड़ता है, और तो उससे परिवार के सदस्यों के देखभाल करनी है दूसरी तरफ घर की आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए बाहर के उत्तरदायित्व को भी निभाना पड़ता है। लेकिन वास्तव में देखा गया है कि हम पश्चिमी देशों का अनुकरण के संदर्भ में तो कर रहे हैं कि महिलाओं को धन उपार्जन के लिए घर से बाहर जाना चाहिए लेकिन जहां परिवार के समर्थन की तथा घरेलू जिम्मेदारियों को बांटने की जिम्मेदारी आती है वहां हम तुरंत भारतीय बन जाते हैं। यह पुरुष प्रधान समाज घर के कार्यों में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी उठाने से कतराते हैं। इन्हीं सब समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र को लिखा गया है जिसमें की महिलाओं की रोज की समस्याएं, उनके ऑफिस की समस्याएं तथा उनके सकारात्मक हल को ढूंढने का प्रयास किया गया है।

शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य हैं-

1- कार्यकारी महिलाओं की घरेलू घरेलू समस्याओं के संदर्भ में जानकारी
2- कार्यकारी महिलाओं के कार्यालय में आने वाली समस्याएं
3- इन समस्याओं का सकारात्मक प्राप्त करना।

शोध विधि- प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक अध्ययन विधि द्वारा द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। यह शोध प्रबंध प्रमुख रूप से महिलाओं से संबंधित शोध अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों, प्राध्यापकों तथा नीति निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण है।

भूमिका:- भारत को गार्गी और विद्योत्तमा का देश कहा जाता है सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में जब हम देखते हैं कि महिलाओं के एक बहुत बड़े समूह के साथ हमेशा दोहरा व्यवहार किया जाता है। महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला के रूप में भी माना जाता है। एक तरफ जहां उन्हें हम नई पीढ़ी केन यू के पत्थर रखने के रूप में देखते हैं तथा पाते हैं कि वह जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है तथा कुछ क्षेत्रों में तो वह पुरुषों से भी आगे हैं। आज महिलाओं ने घर की चारदीवारी को छोड़कर एक बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है परंतु साथी हम देख रहे हैं कि नवीन भूमिकाओं के साथ साथ उसकी जिम्मेदारियां भी लगातार बढ़ती जा रही है। भूमंडलीकरण के साथ-साथ महिलाओं के आर्थिक कार्य क्षेत्र की जिम्मेदारी में भी वृद्धि हुई है परंतु साथ ही साथ उन्हें अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है तथा उनका सकारात्मक हल ढूंढने के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं। महिलाएं हमारे देश की आबादी का लगभग 48% भाग है, परंतु कार्य क्षेत्र में उनकी भूमिका संगठित क्षेत्रों में 20.5% , असंगठित क्षेत्रों में 32% , कृषि क्षेत्र में 27%, औद्योगिक क्षेत्र में 11% है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन-

सुधीर कुमार श्रीवास्तव(1985) ने महिला सशक्तिकरण में महिला की भूमिका नामक अपने अध्ययन में बताया कि महिलाएं तभी सशक्त हो सकती है जबकि शिक्षा के माध्यम से जागरूकता लाई जाए। ए एस एल्टे कर(1956) द्वारा किया गया अध्ययन पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिंदू सिविलाइजेशन पर हुआ अध्ययन भारतीय नारी के बचपन व शिक्षा की समस्याएं स्त्री की विवाहिता जीवन की अनेक विषम समस्याओं समाज में विधवाओं की स्थिति धार्मिक स्थिति स्त्रियों के संपत्ति संबंधी अधिकार भारतीय स्त्री का समाज में स्थान आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है और उसके संबंध में उचित सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 5 को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया एवं महिला उत्थान की दिशा में अनेक प्रयास किए। इसी समय में ही भारत सरकार ने ने इक्वलिटी रिपोर्ट प्रकाशित कर भारतीय महिलाओं की वर्तमान स्थिति और भूमिका संबंधी जानकारी प्रदान कराने में सफल रूप से सहायता पहुंचाई। महिलाओं के उत्थान की दिशा में और उनके वर्तमान स्वरूप की चर्चा करने में सहायक ही नहीं हुई बल्कि उसके संबंध में नई सोच और अन्वेषण की दिशा में बढ़ते हुए प्रयासों के मार्ग में भी यह सहायक रही।

ारी महिलाओं की समस्याएं- 100 शहरी क्षेत्र की ाओं के साथ किए सर्वेक्षण का परिणाम निम्नलिखित है ,कार्यकारी महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जिसमें से प्रमुख है|

कार्य कारी महिलाओं की समस्याएं-	हां (%)	नहीं (%)
लैंगिक अत्याचार	30	70
घरेलू और कार्यक्षेत्र की दोहरी जिम्मेदारी	80	20
प्रशंसा ना मिलना	30	70
गर्भावस्था के दौरान विभेद	80	20
सफल होने को अपराध के बोध के रूप में देखा जाना	66	44
पुरुष प्रधान समाज में कम महत्व	87	13
घर के सदस्यों के सहयोग का अभाव	77	33
निर्णय लेने की स्वतंत्रता ना होना	72	28
कार्यस्थल पर शिशु पालन घर का अभाव	100	00
विवाह की प्रधानता	76	24
अवकाश का वेतन ना मिलना	88	12
दूसरे शहर में स्थानांतरण होने पर नौकरी छोड़ना	90	10
दोषपूर्ण सामाजिक मान्यताएं और संस्कार	82	18
महिला पुरुष में भेदभाव	70	30

स्रोत-सर्वेक्षण- मुंबई महानगर में कार्य करने वाली संगठित और असंगठित क्षेत्र की 100 महिलाएं।

प्रस्तुत सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि भारतीय समाज में इतने सारे परिवर्तनों के बावजूद भी आज भी महिलाओं की स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। समाज में आज भी उन्हें परिवार और समाज के द्वारा दोहरे दर्जे के नागरिक का दर्जा दिया जाता है। प्रस्तुत सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि अधिकांश महिलाओं के साथ कार्य स्थल पर भेदभाव किया जाता है, लगभग 30% महिलाएं ऐसी है जिनके साथ कार्यस्थल पर लैंगिक विभेद किया जाता है। लगभग 80% महिलाएं घर और कार्यालय दोनों की दोहरी जिम्मेदारी उठा रही है। घरेलू कार्य के लिए उन्हें किसी भी प्रकार की प्रशंसा नहीं मिलती है परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी के साथ साथ कई बार महिलाओं को उनके सफल होने को अपराध के रूप में माना जाता है। घर खरीदने, बच्चों की शिक्षा, निवेश संबंधी निर्णय, परिवार के सदस्यों का सहयोग का अभाव महिलाओं को उनके कार्यों को करने के लिए हमेशा हतोत्साहित करता है। भारतीय समाज में विवाह की प्रधानता महिलाओं के कैरियर की एक प्रमुख बाधा के रूप में माना जाता है।76% महिलाएं अपने कार्य को विवाह की अनिवार्यता के कारण बीच में ही छोड़ने को विवश थी। 88% महिलाओं ने सर्वेक्षण के द्वारा जानकारी दीजिए असंगठित क्षेत्र में अवकाश के दौरान उन्हें किसी प्रकार का वेतन या अन्य सुविधा प्राप्त नहीं होती है। इस प्रकार से कार्यकारी महिलाओं को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि यदि पारंपरिक रूप से घर का काम महिलाओं की ही जिम्मेदारी होती है प्राचीन समय में स्थिति अलग थी क्योंकि लोगों की आवश्यकताएं कम थी वर्तमान परिपेक्ष में जब महिलाओं को घर के साथ-साथ बाहर की भी जिम्मेदारी उठानी पड़ रही है कभी भी उनसे यह उम्मीद की जाती है की अपने घर के सारे कार्य करने के साथ-साथ हुए कार्यालय में भी एक कुशल कर्मचारी की भांति कार्य कर सकें। एक कामकाजी महिला

को कामकाजी पुरुषों से दुगना काम करना पड़ता है ।अपने बच्चे, माता पिता, ससुर इत्यादि का भी उन्हें ख्याल रखना पड़ता है अब क्योंकि संयुक्त परिवार टूट गए हैं इसलिए उनका हाथ बताने वाला कोई नहीं है। इसलिए उनकी समस्याएं और भी बढ़ जाती हैं।

कार्यकारी महिलाओं की समस्याओं का समाधान

सरकार द्वारा कार्यकारी महिलाओं की समस्याओं को हल करने के लिए अनेक कानूनी प्रावधान किए गए हैं परंतु इन सब के बावजूद आज भी स्थिति ज्यों की त्यों है क्योंकि अधिकांश महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों के विषय में जानकारी नहीं है। कार्यकारी महिलाओं की समस्याओं के समाधान के लिए किए गए सरकारी प्रावधान निम्नलिखित है -

1. धारा 22(2) फैक्ट्री एक्ट 1948 के अनुसार किसी भी महिला को किसी भी बड़ी मशीन को साफ करने यह चलती हुई मशीन के प्रत्यक्ष संपर्क में नहीं लगाया जा सकता जो कि किसी भी प्रकार से उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो।
2. फैक्ट्री एक्ट 1948 की धारा 27 के अनुसार महिला को कॉटन उद्योग में काटन दबाने के कार्य में नहीं लगाया जाना चाहिए।
3. 1948 के फैक्ट्री एक्ट की धारा 66(1) (b) के अनुसार सुबह 6:00 बजे से पहले और शाम को 7:00 बजे के पश्चात किसी फैक्ट्री में महिलाओं को कार्य करने की अनुमति नहीं है।
4. धारा 25 बीड़ी और सिगरेट कर्मचारी अधिनियम, 1966 के अनुसार महिलाओं को सुबह 6:00 से पहले और शाम को 7:00 के बाद कार्य करने की अनुमति नहीं है।
5. मातृत्व लाभ अधिनियम 1961 के अनुसार कार्य करने वाली महिलाओं को मातृत्व लाभ के अंतर्गत 6 महीने सवेतन अवकाश की व्यवस्था है।।
6. किसी भी कार्यालय में महिलाओं के लिए अलग से टॉयलेट की व्यवस्था होना अत्यंत अनिवार्य है।
7. धारा 38, कंपनी अधिनियम ,धारा 44. अंतर राज्य प्रवासी मजदूर अधिनियम 1979, चाय बागानों में कार्य करने वाली महिलाओं के बच्चों के लिए अलग से शिशु पालन ग्रह का कंपनी के निकट होना अनिवार्य है।
8. पश्चिमी देशों की भांति घर के कामों में पुरुषों को महिलाओं के साथ बराबरी से काम में हाथ बढ़ाना चाहिए जिससे कि महिलाएं घर और बाहर के कार्यों में बिना किसी परेशानी के सामंजस्य स्थापित कर सके।
9. इस पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों को इस प्रकार से प्रशिक्षित किया जाए कि वे महिलाओं को घर से बाहर ऑफिस में परिवहन के साधन इत्यादि के स्थानों में उन्हें सुरक्षित महसूस करवा सकें तभी एक सभ्य और सुसंस्कृत भारत का निर्माण हो सकेगा और हम वास्तव में महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम उठा सकेंगे।
10. संगठित क्षेत्रों में तो मातृत्व अवकाश अनिवार्य है परंतु असंगठित क्षेत्र में सरकार द्वारा कुछ ऐसी व्यवस्था की जाए जिससे कि महिलाओं को प्रसव के पश्चात वित्तीय सहायता मिल सके जिससे कि वे अपने बच्चे को बड़ा करने के लिए दूसरों पर निर्भर न रहें।
11. घरेलू कार्यों में सहायता के लिए संगठित क्षेत्र के कुछ स्वयंसेवी संगठनों को आगे आकर सुरक्षित सहायता प्रदान करने की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे कि कार्यकारी क्षेत्र में महिलाओं की अधिकाधिक भागीदारी बढ़ सके और वह स्वतंत्र और निर्भीक होकर कार्य कर सकें। कार्यालयों में भी इस प्रकार की व्यवस्था हो की महिलाएं अपने कार्य को करने के साथ ही अपने बच्चों का की भी देखभाल कर सकें।
12. पुरुषों की नकारात्मक मानसिकता में परिवर्तन कर उन्हें इस बात के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित किया जाए कि महिलाएं भी उनके बराबरी का है इसलिए उन्हें भी घर के कामों और बच्चों की जिम्मेदारी में अपना सक्रिय सहयोग देना आवश्यक है तथा वे भी उसी सम्मान की हकदार है जिस सम्मान की पुरुष।

निष्कर्ष:- चाहे कोई घर हो या देश जहां पर महिलाओं का सम्मान होता है वहीं पर उन्नति, सुख समृद्धि निवास करती है इस तथ्य को पुरुष प्रधान समाज को भली-भांति समझना होगा तभी एक स्वस्थ सार्थक तथा सकारात्मक समाज का निर्माण होगा। नेपोलियन बोनापार्ट का कथन था आप हमें अच्छी मां दीजिए हम आपको एक अच्छा राष्ट्र देंगे यह तभी संभव होगा जब हम अपने दकियानूसी खयालों से बाहर निकलकर महिलाओं को बराबरी का और समानता का दर्जा देंगे तभी एक स्वस्थ और सभ्य समाज का निर्माण होगा जो कि देश के निर्माण के पथ को प्रशस्त करेगा। भारतीय कार्य शक्ति में महिलाओं का एक बहुत बड़ा भाग है 2011 की जनगणना के अनुसार महिला कार्य शक्ति कुल कार्य शक्ति का लगभग 26% भाग है। इन समस्याओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि भारत में महिला श्रम शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग हैं |

संदर्भ ग्रंथ;-

1. https://labour.gov.in.node
2. Bhuvaneshwari M. (2013), "A Case Study on Psychological and Physical Stress Undergone By Married Working Women", IOSR Journal of Business and Management, e-ISSN: 2278- 487X, p-ISSN: 2319-7668. Volume 14, Issue 6. 3.
3. Shobha Sundaresan (2014), "Work-Life Balance – Implications For Working Women", Ontario International Development Agency International Journal of Sustainable Development, Canada, ISSN 1923-6654 (print) ISSN 1923-6662 (online).

भारतीय समाज : समसामयिक प्रश्न

साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान

सं. डॉ. संतोष कौल काक

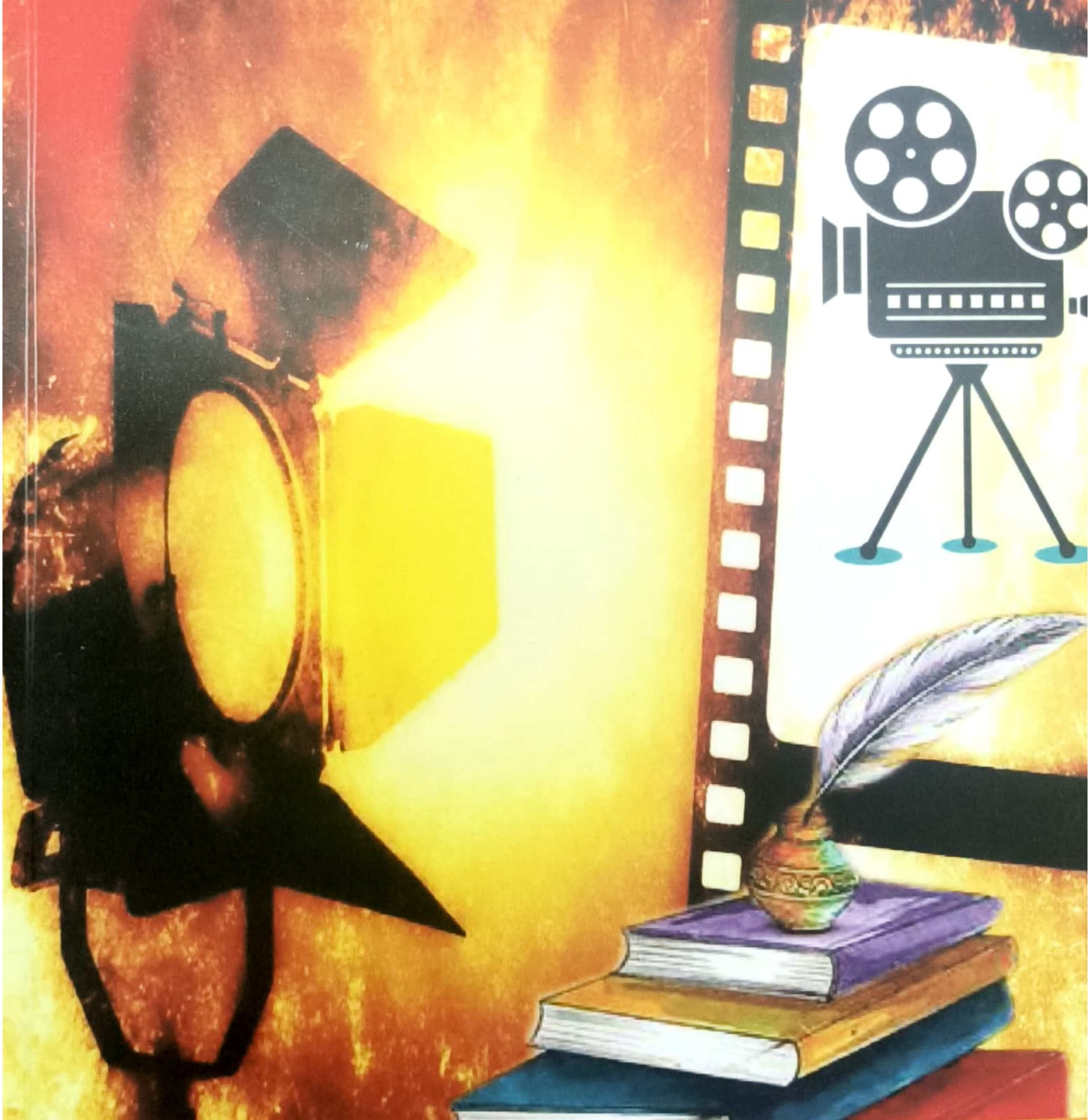

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय समाज : समसामयिक प्रश्न

साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान

संपादक

डॉ. संतोष कौल काक

बी.एम.रुइया गर्ल्स कॉलेज
11, कृष्ण कुंज, वाच्छा गांधी रोड,
गामदेवी, मुंबई-400007

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-922913-5-2

Copyright © Writer

प्रथम संस्करण 2024

मूल्य : ₹495 /-

शीर्षक	Title
साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान	**Sahitya Aur Cinema men Mahilaon ka Yogdan**
संपादक	Editor
डॉ. संतोष कौल काक	**Dr. Santosh Kaul Kak**
प्रकाशक	Publisher
मुम्बई भाषा परिषद	**Mumbai Bhaashaa Parishad**
605, परम मोगा टॉवर	605, Param Moga Tower
जे.एस.एस. रोड	J. S. S. Road
चर्नी रोड	Charni Road
मुंबई - 400 004	Mumbai - 400 004

Phone : 9022 521190 / 9821 251190

Email : publication@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : सुरेश सिंह

आवरण : शिव पांडेय

मुद्रक : सुजाता डिजिटेक, मुंबई-400 011

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

1. समांतर सिनेमा में पत्नी 11
   –डॉ. हूबनाथ पांडेय

2. नारी सशक्तीकरण-हिन्दी सिनेमा के ज़ानिब से 26
   – डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी

3. समकालीन नाट्य साहित्य और महिला नाटककार 43
   –प्रो. उषा मिश्रा

4. आदिवासी स्त्री का दमन एवं विद्रोह 51
   –डॉ. सुनीता साखरे

5. 21वीं सदी में हिन्दी उपन्यास : संदर्भ मैत्रेयी पुष्पा 60
   –डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय

6. नारी स्वतंत्रता की नई उड़ान 74
   – डॉ. रवींद्र कात्यायन

7. पटकथा लेखन में महिला लेखिकाओं का योगदान 83
   –डॉ. सुनीता मिश्रा

8. नारी अस्मिता पर केन्द्रित कृष्णा सोबती के उपन्यास 91
   –डॉ. सुमा टी. रोडनवर

9. प्रथम 'नारीवादी' कहानीकार सुमित्रा कुमारी सिन्हा 100
   –डॉ. गंगाधर चाटे

10. उषा प्रियंवदा की 'मछलियाँ' कहानी का अंतर्द्वंद्व 121
    –डॉ. गीता यादव

11. हिन्दी साहित्य के आधुनिककाल में महिला आत्मकथाकार 125
    –डॉ. चंपा मासीवाल

Scanned with OKEN Scanner

पटकथा लेखन में महिला लेखिकाओं का योगदान

• डॉ. सुनीता मिश्रा

फिल्म निर्माण के लिए कथा और पटकथा उतनी ही जरूरी है जितना कि कारखाने के लिए कच्चा माल। पटकथा किसी फिल्म के लिए लेखक द्वारा लिखा गया मूल पाठ होता है। फिल्म और टीवी धारावाहिकों के लिए किसी कहानी के रूपांतरण को पटकथा कहते हैं। सीधे सरल शब्दों में यदि हम कहें तो फिल्म और टीवी धारावाहिकों के आधार लेखन को पटकथा कहते हैं और कहानी इसका आधार होती है। फिल्म और धारावाहिकों की सफलता और असफलता कहानी और पटकथा पर निर्भर होती है। इसलिए पटकथा हेतु कहानी का चुनाव करते समय मौलिकता, मनोरंजन, प्रासंगिकता, संतुलित संख्या व कथानक के अनुसार पात्रों का होना आंतरिक व बाह्य द्वंद्व, परिवेश, चरम उत्कर्ष आदि का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है। पटकथा लेखन का सही स्वरूप दृश्य-श्रव्य के अनुकूल होना होता है। इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि पटकथा कहानी की पूरी प्रतिछाया हो। लेखक कहानी के किसी ऐसे बिंदु से भी पटकथा शुरू कर सकता है जो कहानी का प्रारंभिक बिंदु न हो क्योंकि लेखक पटकथा में कहानी को उस रूप में प्रस्तुत करता है जिस रूप में वह पर्दे पर दिखाई देगी, अर्थात पटकथा लेखक कहानी को दृश्यात्मक रूप में देखता है और कहानी के जो प्रसंग किसी खास तरह के विजुअल की मांग करते हैं, उन्हें पूरा करता है। इसके लिए यह जरूरी नहीं कि कहानी के क्रम से ही पटकथा लिखी जाए। पटकथा लेखक दृश्यों को आपस में जोड़ने के लिए कुछ ऐसे दृश्यों की कल्पना करता है जिन्हें उपदृश्य कहते हैं। इन उपदृश्यों में दो-चार शॉर्ट होते हैं जो किसी दृश्य को स्थापित करने में मदद करते हैं। वस्तुतः पटकथा कहानी को दृश्य रूप में उतारने की कला है। पटकथा लेखक के लेखन में दर्शकों को बांधे रखने की क्षमता होती है। पटकथा के अनुकूल कहानी में विभिन्न दृश्य,

Scanned with OKEN Scanner

घटना, प्रसंग, विषय का सिलसिलेवार होना संघर्ष व कौतुहल बना रहना चाहिए।

पटकथा लेखन के तीन महत्वपूर्ण अंग है–कहानी, बनावट और संवाद। इसमें पहला प्रस्थान बिंदु (प्रिमाइस) है। इसके अंतर्गत प्रस्तावना, संघर्ष और समाधान आते हैं। इसे पटकथा का त्रिक-बिंदु भी कहते हैं और यही पटकथा की सफलता का सूत्र ओ.बी.ई. (Opening-Body-Ending) या ओ.बी.सी. (Opening-Body-Conclusion) है अर्थात पटकथा को तीन भागों में बांटा जाता है– पहला ओपनिंग यानी शुरुआत। इसमें प्रस्तावना या विषय वस्तु का परिचय होता है, दूसरा बॉडी यानी मध्य भाग इसमें विषय वस्तु का वर्णन या विस्तार होता है, तीसरा एंडिंग अर्थात अंत इसमें विषय वस्तु का निष्कर्ष या उपसंहार होता है, यही ओ.बी. ई. (Opening-Body-Ending) या ओ.बी.सी. (Opening-Body-Conclusion) कहलाता है।

पटकथा लेखन के प्रस्थान बिंदु यानी कथानक को समस्या, संघर्ष और समाधान के रूप में प्रस्तुत करने की अवधारणा को फिल्म लेखन की भाषा में प्रिमाइस कहते हैं। जैसे कहानी लेखन के लिए प्लॉट लिखा जाता है वैसे ही पटकथा लेखन के लिए प्रिमाइस लिखना अनिवार्य होता है, अर्थात प्रिमाइस पटकथा का आधार, उसकी जमीन है और मूल विषय तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि, अन्तर्संबंध है, टैगलाइन नाटकीयता, दो मिनट की फिल्म आदि इस प्रस्थान बिंदु के गुण हैं। कथानक का ताना-बाना इन्हीं तीन बिंदुओं के इर्द-गिर्द घूमता है। मूल विषय तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि कथानक को दिशा और आधार देते हैं। अंतर्संबंध कहानी कथानक के साथ-साथ अवांतर कथा, घटनाओं और प्रति-घटनाओं का सीधा संबंध कहानी की समस्या, संघर्ष और समाधान से जोड़ता है। पटकथा की टैगलाइन पढ़ने मात्र से ही आगे के कथानक को जानने की उत्सुकता बढ़ जाती है। अर्थात यह कुतूहल, जिज्ञासा, उत्सुकता आदि को बढ़ाता है। नाटकीयता एक अच्छे प्रिमाइस, कथा-पटकथा का महत्वपूर्ण गुण है और दो मिनट की फिल्म यानी टू मिनट मूवी अर्थात पॉइंट्स ऑफ

स्क्रीन प्ले, जिसमें समस्या, संघर्ष व समाधान का संक्षिप्त रूप होता है। प्रिमाइस को ही फिल्म निर्माण की भाषा में फिल्म मेकर्स टू मिनट्स मूवी के रूप में ज्यादा जानते हैं। पटकथा लेखक में नैसर्गिक प्रतिभा, प्रेक्षक और विश्लेषक किस्सागो वृत्ति, भाषा पर असाधारण पकड़ उच्च कल्पना शक्ति, दृश्य-श्रव्य बोध आदि गुणों का होना अनिवार्य है।

जीवन और जगत का, घर और बाहर का कोई ऐसा कोना शायद ही छूटा हो, जहाँ महिलाओं ने अपना कदम न रखा हो, अपने योगदान से उसे समृद्ध न किया हो। पटकथा लेखन के क्षेत्र में भी महिला लेखिकाओं का अतुलनीय योगदान रहा है। इस क्षेत्र में कई ऐसी लेखिकाएँ हैं जिन्होंने अपनी कलम से पटकथा लेखन को न केवल समृद्ध किया, अपितु अपना सिक्का भी जमाया है और यह सिद्ध करके दिखाया है कि इस क्षेत्र में भी महिलाएँ पीछे नहीं हैं।

कहानी लेखन के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने वाली मशहूर लेखिका अचला नागर ने पटकथा लेखन के क्षेत्र में भी अपने हुनर को तराश कर अपने नाम की तूती बुला दी। लखनऊ में जन्मी मशहूर साहित्यकार अमृतलाल नागर की पुत्री डॉ. अचला नागर को साहित्य लेखन का कौशल पैतृक संपत्ति के रूप में प्राप्त हुआ था। एक साहित्यकार के रूप में उनके दो कथा संग्रह क्रमशः 'नायक-खलनायक' और 'बोल मेरी मछली' तथा एक संस्मरण संग्रह 'बाबूजी बेटा जी एंड कंपनी' प्रकाशित है। उन्हें साहित्य भूषण पुरस्कार, हिन्दी उर्दू साहित्य एवार्ड, कमेटी सम्मान, यशपाल अनुशंसा सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान आदि से सम्मानित किया जा चुका है। साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बाद उन्होंने हिंदी फ़िल्म पटकथा लेखन में भी अपनी लेखनी का जादू चलाने का सफल प्रयास किया। उन्हें अपने -आपको एक मशहूर पटकथा लेखिका के रूप में स्थापित करने का अवसर तब मिला जब उनके लेखन कौशल को देखते हुए फिल्म के मशहूर डायरेक्टर-प्रोड्यूसर यश चोपड़ा ने उन्हें खत लिखकर मथुरा से मुंबई बुला लिया। डॉ. अचला नागर 1982 में प्रख्यात फ़िल्मकार बी.आर.चोपड़ा की

निर्माण संस्था बी.आर. फ़िल्मस से जुड़ गईं। बी.बी.सी. से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा है कि "कुछ आँखें प्रतिभा पहचानती हैं और जिसने एक कहानी लिखने वाली, रेडियो में काम करने वाली महिला को फिल्मों में काम करने का चांस दिया।" अचला कहती हैं कि उन्हें स्क्रिप्ट लिखना नहीं आता था तो उन्हें पाँच-पाँच सीन लिखकर विजुलाइजेशन करना सिखाया गया और फिर उन्होंने फिल्म 'निकाह' लिखी जो सुपर हिट हुई। आगे चलकर अचला को बेहतरीन लेखन के लिए फिल्म फेयर का सम्मान भी मिला। वे मानती हैं कि "आगे बढ़ना है, अच्छी जिंदगी जीना है तो संघर्ष करना पड़ेगा और अच्छा काम करने पर काम मिलता रहता है।" अचला जी ने 'आखिर क्यों', 'बाबुल' और 'बागवान', 'ईश्वर', 'मेरा पति सिर्फ मेरा है', 'सदा सुहागन,' 'निगाहें', 'नगीना' जैसी सफल फिल्मों की स्क्रिप्ट लिखकर खूब धूम मचाई। डॉ. अचला नागर की पटकथा में एक स्त्री की सशक्त अभिव्यक्ति, रिश्ते-नाते, जवाबदारियाँ, वफा, प्रेम, जज्बात, के छोटे-छोटे दृश्य इतने सशक्त होते हैं कि दर्शक बँधा रहता है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या लेखन में महिलाओं के लिए फिल्म के क्षेत्र में काम मिलना आसान है या उतना ही मुश्किल जितना बॉलीवुड के दूसरे क्षेत्रों में। इस प्रश्न के उत्तर में 'फैशन', 'हीरोइन' और 'यादें' जैसी फिल्मों की को-स्क्रिप्ट राइटर रह चुकी अनुराधा तिवारी कहती हैं कि – "बॉलीवुड लेखन को महिलाओं का जॉब मानता है।" उन्होंने कहा–"यह सच है कि पुरुष लेखक ज्यादा लोकप्रिय हैं लेकिन महिला लेखक को भी यहाँ बराबर सम्मान दिया गया है।" अनुराधा कहती हैं –"लेखन को जेंडर से नहीं जोड़ सकते हैं किसी भी क्षेत्र में बिना संघर्ष के सफलता नहीं मिलती बॉलीवुड में भी तब तक संघर्ष करना पड़ता है जब तक आप बॉलीवुड के सहारे रहेंगे।" मुंबई के मीडिया उद्योग में काम करने वाली अनुराधा तिवारी एक प्रसिद्ध भारतीय लेखिका, निर्देशिका और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण हैं। जामिया मिल्लिया इस्लामिया से फिल्म मेकिंग में गोल्ड मेडलिस्ट और मास. कॉम. में मास्टर्स, अनुराधा ने क्रिएटिव आर्टिस्ट के साथ-साथ क्रिएटिव हेड ऑफ कंपनीज दोनों के रूप में सभी

मीडिया प्लेटफॉर्म पर बड़े पैमाने पर काम किया है। 2017 में उन्होंने KOSEN-RUFU, एक कंपनी बनाई जो विभिन्न परियोजनाओं पर राइटर्स रूम के रूप में काम करने के लिए दुनिया भर के लेखकों के साथ सहयोग करती है।

अनुराधा पटकथा लेखन में एक प्रमाणन पाठ्यक्रम भी संचालित करती हैं। अनुराधा मानती हैं कि –"संघर्ष करना ही है तो बॉलीवुड को अपना दूसरा बिजनेस मानकर मुंबई आइए, न निराशा होगी न हताशा।" अनुराधा ने महेश भट्ट के मुख्य सहायक के रूप में अपना करियर शुरू किया और उनके साथ तीन फिल्मों में काम किया। उसके बाद अनुपम खेर की मीडिया आधारित कंपनी के लिए स्वतंत्र लेखक-निर्देशक के रूप में एक लंबे कार्यकाल तक काम किया। उन्होंने प्रकाश झा की 'दामुल', सुभाष घई की 'यादें' और पदम कुमार की 'सुपारी' पर एक कहानी-पटकथा लेखक के रूप में काम किया। उन्होंने बारह सफल टेलीविज़न शो लिखे हैं। सोनी पर प्रसारित यशराज फिल्म्स के लिए छब्बीस भाग में सुपर हीरो श्रृंखला भी लिखी है। अनुराधा ने 'फैशन', 'जेल' जैसी पुरस्कार विजेता फिल्मों की कहानी और पटकथा लेखन कर अपनी सफलता में चार चांद लगा दिये। अमेज़ॅन प्राइम पर वेब सीरीज़ 'लाखों में एक' (सीज़न 2) ने उन्हें पहले एस.डब्ल्यू.ए अवार्ड्स में नामांकित किया, जिसमें वह एक जूरी सदस्य भी थीं। अनुराधा ने अनेक टीवी एवं वेब सीरीज के लिए भी पटकथा लेखन का कार्य किया हैं। उदाहरणतः– 'मेरी लाइफ है,' 'हम 2 हैं ना', 'साक्षी', 'काजल', 'जीते हैं जिसके लिए', 'सलाम जिंदगी', 'हमसफर' (सोनी), 'एक हज़ारों में मेरी बहना है', 'शरत' (स्टार प्लस), 'जब लव हुआ (ज़ी)', 'धूम मचाओ धूम' (डिज्नी), 'चुना है आसमान' (स्टार वन), 'यहाँ के हम सिकंदर' (ज़ी नेक्स्ट), 'क्रेजी', 'स्टुपिड', 'इश्क', 'हे गुजरिया' (चैनल V), 'शीर्ष पर लड़कियाँ' (एम.टीवी), 'सावधान इंडिया' (टीवी श्रृंखला), 'लाइफ ओके' आदि। विभिन्न शैलियों में काम करते हुए, अनुराधा जी को Conscious Creativity के रूप में युवा, नए क्रिएटिव माइंड्स को

प्रशिक्षित करने की प्रेरणा के लिए जाना जाता है।

वैसे तो हर क्षेत्र में भाई-भतीजावाद चलता है, परिवारवाद का बोल-बाला है, बॉलीवुड भी इससे अछूता नहीं। अनुराधा बताती हैं–"बॉलीवुड में बाहरी लोगों को अपना पांव जमाने में समय लगता है क्योंकि जमें-जमाए लोगों के परिवार में भी बहन, मां, बेटी, पत्नी लेखक और निर्देशक हैं, फिर किसी बाहरी को क्यों आने दे।"

फिल्म समीक्षक अजय ब्रह्मात्मज कहते हैं–"परिवारवाद का सिक्का हर जगह जमा हुआ है। बॉलीवुड भी इसकी चपेट में है। किन्तु बॉलीवुड स्ट्रांग और इंटेलिजेंट महिलाओं का स्वागत दोनों हाथों से करता है।" महिला लेखिकाओं के ऐसे कई नाम हैं, जिन्होंने फिल्म प्रोडक्शन से लेकर लेखन और निर्देशन तक में दखल रखा है और नाम कमाया है। उन्होंने कहा फातिमा बेगम से लेकर देविकारानी, मीना कुमारी, अर्पणा सेन आदि का नाम ऐसी ही सफल महिलाओं के रूप में लिया जाता है। पहले लड़कियाँ कम थी लेकिन अब बॉलीवुड में लेखन से लेकर निर्देशन, टेक्नीशियन तक में लड़कियाँ फिल्मी सेट पर काम करती खूब दिखाई दे रही हैं और सफल हैं। 'वेटिंग','लंदन-पेरिस-न्यूयॉर्क', सरीखी फिल्में लिख चुकी अनु मेनन का मानना है कि अगर स्क्रिप्ट अच्छी है तो राइटर मेल हो या फीमेल निर्माता उस पर विश्वास करते हैं।" वह कहती हैं-"मैंने अपनी दोनों ही फिल्मों का निर्देशन किया है, महिला हो या पुरुष तभी तक है जब तक निर्माता को स्टोरी पसंद नहीं आती जिसके पास लेखन का हुनर है वह किसी न किसी तरह अपने पैर जमा ही लेता है। चेन्नई में पली और लन्दन में थिएटर स्कूल ऑफ ड्रामा में पढ़ी अनुराधा मेनन उर्फ अनु मेनन ने अपने करियर की शुरुआत एक उत्साही वेब डिजाइनर के रूप में की थी और एक सीनियर वेब डेवेलपर की भूमिका में एक सुप्रसिद्ध वेब डेवेलपमेंट कंपनी Cyber Gear, दुबई में एक सक्षम, जिम्मेदार महिला की तरह कार्य कर रही हैं। अपने विषय में अनु कहती हैं –"मैं लेखन और निर्देशन दोनों में ही अच्छी हूँ। कभी आपके पास वह मटेरियल होता है, जिसे आप लिखते हैं और उसका निर्देशन

भी करना चाहते हैं। दूसरे लोगों के लिए भी लिखने से मैं खुश होती हूँ और इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। असल बात यह है कि फिल्म एक निर्देशक का माध्यम है और एक लेखक को उसे समझना होता है।" उनका मानना है कि बॉलीवुड में 'वुमन' डायरेक्टर के कुनबे में शामिल होना अपने आप में खास एहसास महसूस कराता है। अनु ने लंदन में काम किया है और उन्होंने कई शॉर्ट फिल्में और डॉक्यूमेंट्री बनाई है। वह भारत अपनी ग्रेजुएशन फिल्म 'रवि गोज टू स्कूल' बनाने के लिए आई थी। उनकी यह फिल्म एडिनबरा फिल्म फेस्टिवल में गई थी। अबुदंतिया एंटरटेनमेंट के संस्थापक और सीईओ विक्रम मल्होत्रा ने कहा कि "मेनन के पास कहानी कहने की एक अनूठी शैली है।" ... उनकी कहानियों को मजबूत महिला पात्रों के साथ रेखांकित किया गया है। अनु का झुकाव समांतर सिनेमा की ओर अधिक है। अनु मेनन के विषय में ध्यान देने योग्य पहली बात है उनकी चाल। वे लंबी हैं, वास्तव में काफी लंबी हैं, उनका आत्मविश्वास भी कमाल का है। लगभग एक दशक तक यूके में काम कर चुकी हैं। उनकी पसंदीदा फिल्में हैं 'मासूम', 'मिस्टर इंडिया'। 'लंदन पेरिस न्यूयॉर्क' बनाने के बाद एक महिला निर्देशक के रूप में अनु को जो सम्मान मिला है वह अविश्वसनीय है। अनु कहती हैं कि "मुझे लगता है कि यह महज एक भ्रम है कि इंडस्ट्रि महिला निर्देशकों व पटकथा लेखिकाओं पर यकीन नहीं रखती।" मेनन ने अपनी फिल्म में रोमांस के किसी एक रूप को प्रदर्शित नहीं किया है, ऐसा लगता है कि उन्होंने उन रिश्तों का एक गजब अवलोकन तैयार किया है जिनकी लालसा हम सभी करते हैं। साथ ही मेनन इस क्षेत्र में अनुशासन में रहकर नई सभ्यता को अपनाने की कायल हैं । अनु टीवी एवं स्टेज-शो भी कर चुकी हैं। इस विषय में वह कहती हैं कि–

फिल्म लेखन में महिलाएँ लंबे समय से हैं और सफल भी हैं। हनी ईरानी ने बॉलीवुड में कदम बाल कलाकार के रूप में रखा फिर उन्होंने फिल्म लेखन में हाथ आजमाया और सफल रही। 'लम्हे', 'क्या कहना' और 'कहो ना प्यार है' ईरानी की सफल फिल्मों में अपना नाम दर्ज करा

चुकी हैं। लखनऊ की जूही चतुर्वेदी ने दिल्ली में रहते हुए 'विकी डोनर' लिखी फिर 'खूबसूरत' और उसके बाद 'पीकू' की पटकथा लिखी। रेखा निगम ने 'परिणीता','लागा चुनरी में दाग' और उर्मी जुवेकर ने 'ओये लकी! लकी ओये' और 'शंघाई' तथा अनिता दत्त ने 'दोस्ताना', 'हाउसफुल', 'बचना ऐ हसीनो' के डायलॉग और स्क्रीनप्ले लिखे हैं और तारीफ बटोरी है। कहते हैं कहानी कभी खत्म नहीं होती, बस समय के साथ उसके अंदाज कथ्य और किरदार बदल जाते हैं। समकालीन पटकथा लेखन के संदर्भ में यह बात एकदम सही है। बॉलीवुड में नई पटकथा लेखकों में तनुजा, चंद्रा, मीनाक्षी शर्मा, मनीषा कोर्डे, गजल धालीवाल, अलंकृता श्रीवास्तव इत्यादि प्रमुख नाम हैं।

इस प्रकार महिलाओं ने पटकथा लेखन के क्षेत्र में अपनी तूलिका चलाकर यह प्रमाणित कर दिया कि वे हर कार्य करने में समर्थ हैं और अपनी सफल भूमिका से प्रत्येक क्षेत्र को समृद्ध करती रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. https://www. bbc. com>hindi>
2. https://www. garbhanal. com>hindi>
3. पटकथा लेखन एक परिचय, मनोहरश्याम जोशी
4. विकी पीडिया

असोसिएट प्रोफेसर

बी.एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुंबई

***